चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र





कृष्ण के पाण्डवों के पास वापस चले जाने के बाद, दुर्योधन ने कर्ण, शकुनि और दुश्शासन को बुलवाकर विचार-विमर्ष किया।

"कृष्ण सन्धि के लिए आया था, पर अपने काम में असफल होकर लौट गया। वह जाकर पाण्डवों को खूब उकसायेगा। जो वह कहेगा, अर्जुन और भीम करेंगे। युधिष्ठिर उनके विरुद्ध कुछ न करेगा। पाण्डवों की तरफ से लड़नेवाले विराट और द्रुपद तो मेरे शत्रु पहले से ही हैं। पाण्डवों के सेनापतियों में वे मुख्य हैं। इसलिये युद्ध होकर रहेगा। हमें आनाकानी करने की ज़रूरत नहीं है। तुरन्त तैयारियाँ शुरु हो जानी चाहिये। कुरुक्षेत्र में हम सब के लिए तम्बू लगवाओ। उनके निर्माण के लिए उचित स्थल देखो। वह स्थल आसानी से शत्रुओं की पहुँच में न हो। लकड़ी और जल की भी वहाँ सुविधा हो। शिबिर तक आहार पहुँचानेवाले मार्ग सुरक्षित करने की व्यवस्था करो, ताकि शत्रु उन्हें न रोक सके। शिविर में अस्त्र-शस्त्र भी खूब पहुँचाओ। हस्तिनापुर से शिबिर तक अच्छा मार्ग तैयार करवाओ। घोषणा करवाओ कि कल ही सेना कुरुक्षेत्र की ओर कूच करो। कोई गलती न हो।" दुर्योधन ने अपने आदमियों को आदेश दिया।

शकुनि, कर्ण और दुश्शासन ने तुरत युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दीं। कुरुक्षेत्र में दुर्योधन की ओर से लड़ने वाले राजाओं के लिए हजारों तम्बू गाड़ दिये गये। सब व्यवस्था की गई।

इधर हस्तिनापुर में कुहराम मचा हुआ था। दुर्योधन का आदेश सुनते ही, राजा लोग युद्ध की पोषाक पहनने लगे।

पगड़ियाँ वगैरह बाँधने लगे। सारथी रथों को, साईस घोड़ों को, महावत हाथियों को तैयार करने लगे। पदाति चमचमाते कवच पहनकर, ढाल तलवार लेकर युद्ध के लिए तैयार हो गये। नगर को देखकर लगता था, जैसे कोई उत्सव हो रहा हो। जहाँ कहीं नजर जाती, वहीं लोग, घोड़े, हाथी, रथ दीख पड़ते थे। शोर शराबा हो रहा था। ढोल पीटे जा रहे थे। उत्साह दिखाया जा रहा था।

उस दिन, युधिष्ठिर अपने शिविर में आनेवाले कुलसंहार के बारे में चिन्तित हो रहा था। उसने जाकर कृष्ण से पूछा-"हमारी माँ, कुन्तीदेवी युद्ध करने के लिए कह रही हैं। मगर आपका क्या विचार है? आपकी क्या राय है?"

कृष्ण ने कहा-"युद्ध हम कोई अपनी मर्जी से नहीं कर रहे हैं। मैंने दुर्योधन को वह सब कहा, जो कहा जा सकता था। विदुर ने भी उसे समझाया। भीष्म और द्रोण भी उसका विचार न बदल पाये। शकुनि और कर्ण ने उसको उकसा रखा है। इसलिये यह कुल संहार करनेवाला युद्ध हम पर आ पड़ा है। हम अब कुछ



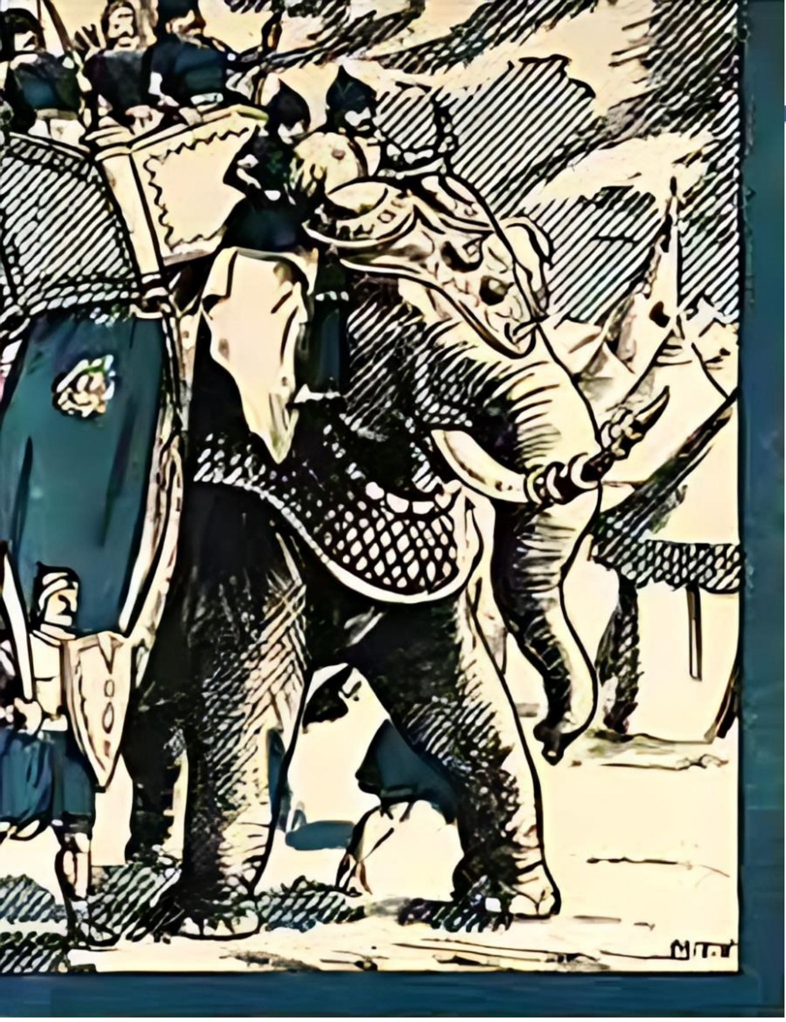
नहीं कर सकते। बिना राज्य लिये तो हम सन्धि न कर सकेंगे। उस हालत में युद्ध कैसे रोका जा सकता है?" कृष्ण ने कहा।

अर्जुन ने भी कृष्ण का समर्थन कर युधिष्टिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया। रात बीत गई। अगले दिन दुर्योधन ने अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना को उत्तम, मध्यम, दुर्बल, तीन भागों में बिभक्त किया। यह तय किया गया कि उत्तम भाग सबके सामने आगे रहे, उसके बाद, बीच में मध्यम, पीछे दुर्बल, रहें ताकि युद्ध का निर्वहण अच्छी तरह हो सके।

युद्ध में अगर कोई रथ टूटकर गिर जाय, तो उसकी मरम्मत करने के लिए, आवश्यक उपकरण रथों में रखे गये। तरकशों में बाण, और अस्त्र, शस्त्र, जल, झण्डे वगैरह, भी रखे गये।

सारथियों के पास कवच होते हैं। मगर उनमें शूर वीर और शस्त्रों को पहचानने की शक्ति होनी चाहिये। ऐसे लोगों को ही सारथी नियुक्त किया जाता था। एक एक रथ में चार चार अच्छे घोड़े जोते





गये। एक एक रथ के साथ सात सात योद्धा थे। एक, रथ के पीछे वाले सामानवाले घोड़े पर सवार होता था, दो सारथी होते थे। दो युद्ध करते। अलावा इनके, एक रथी और एक अश्वनिपुण भी होता था।

हाथियों को भी अलंकृत किया गया। रथों की तरह हाथियों के साथ भी सात सात आदमी होते थे। उनमें दो अंकुश लिये महावत। दो बाणों से युद्ध करनेवाले, दो तलवार से लड़नेवाले, त्रिशूल, आदि लिये एक, ये सब हाथी पर ही सवार होते थे। एक एक अश्वदल के साथ हजार बलवान योद्धा होते थे।

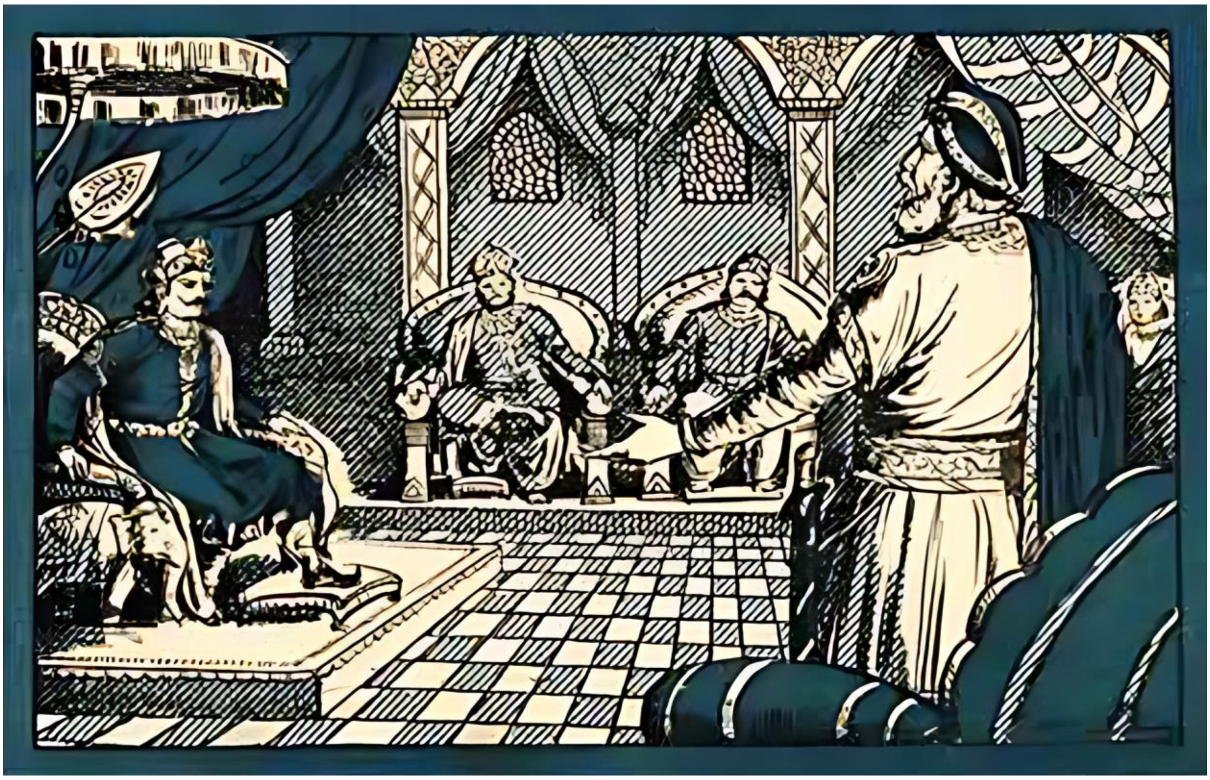
सम्पूर्ण सेना की यूँ व्यवस्था की जाती थी। एक एक रथ के साथ दस दस गज योद्धा। एक एक गज के साथ दस दस घोड़े और एक एक घोड़े के साथ दस दस पदाति।

दुर्योधन ने अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना का इस प्रकार विभाजन किया। उसने उनके लिए ग्यारह सेनापतियों को नियुक्त किया। वे थे, कृपा, द्रोण, शल्य, सैन्धव, सुदक्षि, कृतवर्मा, अश्वत्थामा। भूरिश्रवस, कर्ण, शकुनि, बालिक।

इसके बाद, दुर्योधन ने सब राजाओं के समक्ष, भीष्म की ओर मुड़कर, नमस्कार करके कहा-"महात्मा! चाहे सेना समुद्र के समान बड़ी हो, मगर यदि उसका ठीक नायक न हो तो वह बाम्बी की तरह ढह जाती है। हो सकता है कि सेनापतियों में आपस में झगड़ा हो, यह भी सम्भव है कि उनमें सदा एकमत न रहे। इसलिये आवश्यक है कि सब बातों में समर्थ, सेनापतियों का एक सेनापति हो। युद्ध में विजय पाने के लिए यह पहली सीढ़ी है।

आप बहुत बड़े नीतिवान हो, हमारे हितैषी हो, अजेय हो, धर्म के पथ से विचलित होनेवाले नहीं हो। इसलिये मेरा नम्र निवेदन है की आप इस सेना के उच्चतम सेनापति हों। आप वृषभराज की तरह आगे चलिये, और हम गौवों के झुण्ड की तरह आपके पीछे पीछे चलेंगे। यही मैं आप से बार बार प्रार्थना करूँगा।"

तब भीष्म ने कहा-"बेटा, जो तुमने कहा है, उसमें सच न हो, ऐसी बात नहीं है। पाण्डवों में, सिवाय अर्जुन के, मेरा मुकाबला करनेबाला कोई नहीं है, उसके पास बहुत-से दिव्य अस्त्र हैं। उसने अभी तक मुझसे आमने सामने कभी युद्ध नहीं किया है। अगर हम दोनों एक दूसरे के सामने होकर लड़ें और दिव्यास्त्रों का उपयोग करें तो यह संसार निर्जन हो जायेगा। कुछ न बचेगा। सब नष्ट हो जायेगा। परन्तु मेरे लिये जैसे तुम हो, वैसे पाण्डव भी हैं। मैं उनको अपने आप नहीं मारूँगा।" दुर्योधन आदि उनकी ओर आश्चर्यपूर्वक देखने लगे, और योद्धाओं के बारे में पूछते हो?



"मैं उनको लाखों की तादाद में मार दूँगा। एक और बात भी है। मैं नहीं चाहता कि कर्ण और मैं मिलकर युद्ध करें; क्योंकि उसको मुझसे कुछ द्वेष है। मैं या तो उसके बाद युद्ध करूँगा, नहीं तो पहले। अगर तुम ये दोनों शर्तें मानों तो मुझे उच्चतम सेनापति होने में कोई आपत्ति नहीं है।" भीष्म ने हाथ हिलाते हुए कहा।

यह सुन कर्ण ने कहा-"पहले आप ही युद्ध कीजिये। आपके बाद ही मैं युद्ध में उतरूँगा। आप जैसा चाहेंगे वैसा ही करूँगा।"

इसके बाद, दुर्योधन ने ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर भीष्म को उच्चतम सेनापति नियुक्त किया। भेरी, ढोल, नगाड़े, आदि बजाये गये। सिंह और हाथियों ने हुँकार कर इसका अभिनन्दन किया। शंख बजाये गये। उनकी सेना में सर्वत्र इसका स्वागत किया गया।

इसके बाद, दुर्योधन अपने भाइयों और भीम आदि राजाओं को लेकर कुरुक्षेत्र की ओर धूम-धाम से निकला। कुरुक्षेत्र में उनके तम्बुओं को देखकर लगता था, जैसे वहाँ हस्तिनापुर ही आकर बसा हो। बड़ी चहल पहल थी।

कौरव और पाण्डव में युद्ध होता देख, बलराम, अडिर, साम्ब, गदा, आदि को लेकर युधिष्टिर के पास आया। उसने उससे कहा-"हमारे लिये कौरव और पाण्डव बराबर हैं। मैंने कृष्ण से भी कहा कि वह तुम दोनों की समान रूप से सहायता करें। परन्तु उसने उनसे पक्षपात किया, मैं कौरवों का नाश नहीं देख सकता। मैं तीर्थ यात्रा पर जा रहा हूँ।" यह कहकर वह चला गया।





[९]

[चन्द्रवर्मा कपालिनी से विदा लेकर उत्तर दिशा की ओर निकला। उसे रास्ता दिखाता कालसर्प आगे-आगे चला। एक नाले के किनारे, चन्द्रवर्मा को एक अजीब वृक्ष दिखाई दिया। उस पर लटके एक फल को तोड़कर जब उसने खाया, तो यह पशु-पक्षियों की भाषा समझने लगा। थोड़ी दूर जाने पर, उसे गरम पानी की एक नदी दिखाई दी। उसी समय एक महासर्प उसे पार कर रहा था। चन्द्रवर्मा उसकी पीठ पर से भागकर परले पार पहुँच गया। बाद में....]

चन्द्रवर्मा जब साँप पर से भागता-भागता नाले के बीच में पहुँचा तो नाले की भाप ने उसे मूर्छित-सा कर दिया। उसे यह भी सन्देह हुआ कि कहीं उसके कपड़े जल तो नहीं रहे थे। लहरें जब उठीं, तो उसपर गरम पानी की बौछार हुई। चन्द्रवर्मा लड़खड़ाया। डर लगा कि कहीं वह पानी में न गिर जाय।

परन्तु इतने भय और जल्दबाजी के बावजूद वह आगे भागा जा रहा था। उसकी नज़र, सामने भागनेवाले बन्दरों पर ही गड़ी थी। थोड़ी देर में उसे किनारा दिखाई दिया। चन्द्रवर्मा ने साँप पर से एक छलाङ्ग मारी। वह सिर पर पैर रखकर पेड़ों की ओर भागने लगा।



वह जान गया कि अगर उसकी नज़र उस पर पड़ी तो उसका जीते जी रहना असम्भव था। शंख तक भला क्या जा पाता! परन्तु सौभाग्य से उस सर्प ने अपना सिर चन्द्रवर्मा की ओर न मोड़ा। थोड़ी देर में उसका मुख पेड़ों में जा छुपा। धड़ धीमे-धीमे आगे सरक रहा था।

जब उसे मालूम हो गया कि सर्प की दृष्टि उसपर नहीं पड़ सकती थी तो उसने उसके ताड़ के समान शरीर को गौर से देखा। उसका शरीर इस तरह चमक रहा था, जैसे उसपर तेल पोता गया हो। उसकी खाल ऐसी थी मानों कवच पहन रखा हो। अगर वह उसे तलवार से मारता तो तलवार ही टूटती, उस साँप की खाल भी न उखड़ती, यह चन्द्रवर्मा जान गया।

यह दो चार क्षण का विचित्र अनुभव था। और चन्द्रवर्मा पसीना पसीना हो गया था। वह हाँफता, पसीना पोछता एक तने के सहारे खड़े होकर उस महासर्प की ओर देखने लगा। वह अभी नदी पार कर रहा था।

उसे, न उस की पीठपर भागकर आनेवाले बन्दरों के बारे में मालूम था, न चन्द्रवर्मा के बारे में ही। दस-पन्द्रह फीट वाला उसका काला मुँह, थोड़ी दूर पर, पेड़ों में चन्द्रवर्मा को दिखाई दिया। अङ्गारे जैसी उसकी आँखों को देखकर चन्द्रवर्मा सिहर उठा।

परन्तु फिर भी उसने उसके शरीर में तलवार घुमेड़ कर देखना चाहा। चन्द्रवर्मा ने अपनी तलवार निकालकर जोर से उस पर मारी। खड़ाक, भावाज़ हुई। साँप हिला भी नहीं। वह चलता जाता था। सर्प को शायद ऐसा भी न लगा, जैसे उसपर चोट की गई हो।

चन्द्रवर्मा ने आश्चर्य से चारों तरफ देखा। फलों से लदे वृक्षों को देखते ही उसको अपनी भूख याद हो आई। वह तलवार रखकर, पासवाले पेड़ के पास गया। एक आम काटकर वह मुख में रखनेवाला था कि उसे हाथी का हुङ्कार सुनाई दिया। चन्द्रवर्मा ने यकायक सिर उठाकर उस तरफ देखा, जिस तरफ से यह आवाज आ रही थी।

उसे कहीं हाथी न दिखाई दिया। परन्तु थोड़ी दूर पर तेज़ हवा के कारण पेड़ पौधों को खूब हिलता उसने देखा। उसे फिर कुछ हाथियों का हुङ्कार सुनाई दिया। बड़ी बड़ी टहनियों का टूटना भी उसी समय हुआ। सारा जङ्गल देखते देखते गूँजने लगा था।

चन्द्रवर्मा, जिस टहनी पर बैठा था उस टहनी से हटकर, आखिरी टहनी पर जा बैठा। जिस तरफ से आवाज़ आ रही थी, उस ओर अपना सिर मोड़ा।

उसने जो भयङ्कर दृश्य देखा, वह बड़े-बड़े बहादुरों को भी भयभीत कर सकता था।



गरम पानी की नदी को पार करके महासर्प एक हाथी को अपने शरीर से लपेटकर, उसे खाने के लिए मुख खोलकर, हाथी के मुख को पकड़ रहा था। जान बचाने के लिए, हाथी चिंघाड़ता, हाथ पैर चला रहा था। उसके चारों ओर खड़े कुछ हाथी, सूण्ड उठाये, इधर उधर भागते जोर जोर से चिल्ला रहे थे। और कुछ कर न पाते थे।

उसके पैरों के नीचे अनेक वृक्ष, फड़ाफड़ टूट रहे थे। ऐसा मालूम होता था, जैसे वह महासर्प यह सब कुछ भी न देख रहा हो। कुछ भी न सुन रहा हो। हाथी पर अपनी पकड़ सख्त करता जाता

था। धीमे धीमे, वह अपने गुफा के समान मुख में हाथी रखता जाता था। हाथी का चिंघाड़ना जारी था।

"भगवान! मैंने बहुत भयङ्कर प्रदेश में पैर रखा है। अब तुम ही पर भरोसा है।" चन्द्रवर्मा ने मन ही मन सोचा।

उस गरम पानी के नदी के चारों तरफ के प्रदेश के मुकाबले में कपालिनी का जङ्गल, उद्यान-सा लगता था। उसे अब कई योजन चल कर शंख के घर पहुँचना था। परन्तु इस थोड़ी दूर में ही उसे जो आश्चर्यजनक अनुभव हुए थे, उनके कारण उसका उत्साह ठण्डा पड़ गया। "अगर भगवान ने मेरी मदद न की तो इन भयङ्कर जङ्गलों में, पहाड़ों में, मेरा मर जाना निश्चित है।" चन्द्रवर्मा ने सोचा।

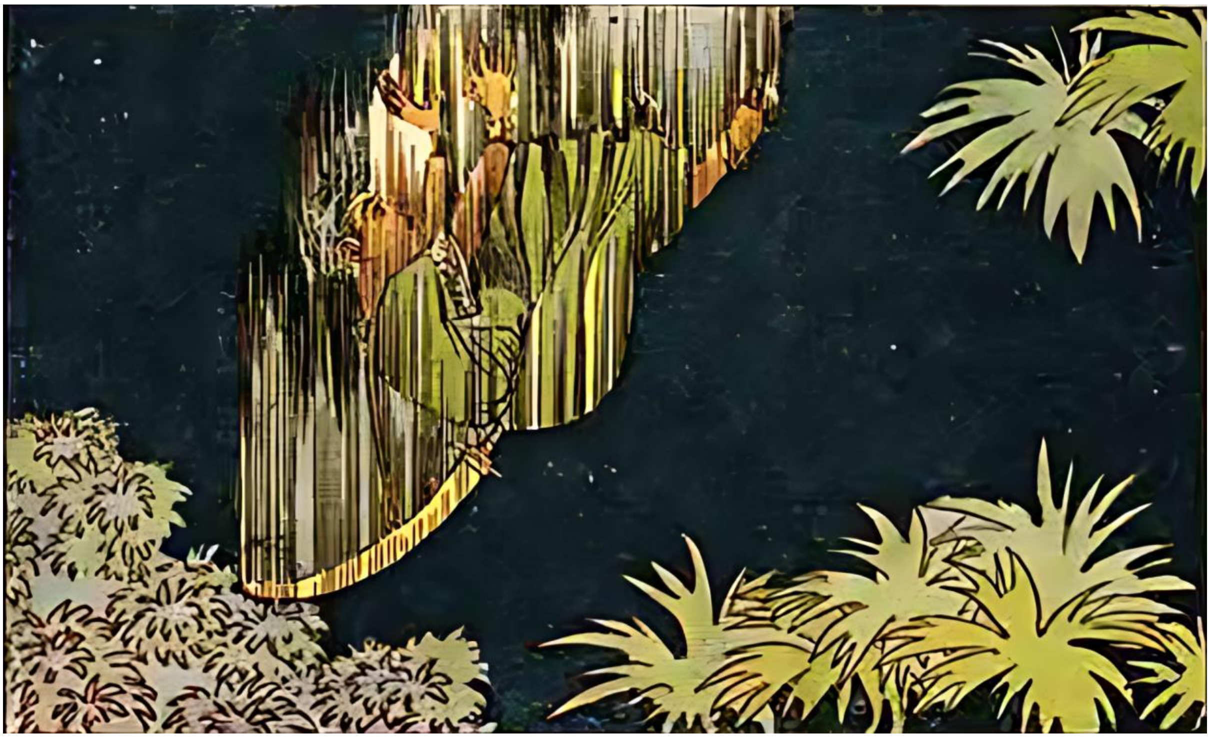
चन्द्रवर्मा ने इन कठिनाइयों के कारण हिम्मत हार कर उदास हो, पत्तों की झुरमुट में आँखे मूँद लीं। उसे उस समय भूख नहीं सता रही थी। वह जो काम करने निकला था वह कितना कठिन था, यह वह जान गया। उसने सोचा, अच्छा होगा, यदि वह जादूगरनी और शंख को छोड़ कहीं और जा सके। परन्तु कहाँ जाया



जाय? कैसे जाया जाय? यह विषम समस्या उसके सामने थी।

चन्द्रवर्मा धीमे धीमे सो गया। उसे न सूर्य का अस्त होना मालूम हुआ, न पशु पक्षियों का अपने घर वापस जाना ही। अन्धेरा हो गया। आकाश में तारे जरुर झिलमिला रहे थे। पर कहीं चाँद न देखाई देता था।

उस वातावरण में ठीक आधी रात के समय वह झञ्झा के कारण उठा। उसने देखा कि उसका शरीर टहनियों पर से ऊपर उठा। चन्द्रवर्मा सोच ही रहा था कि एक ऐसी जगह औधे मुँह गिरा, जो कम्बल की तरह चुभ रहा था। "पत्थरों पर तो नहीं गिरा, जान बची।" सोचता चन्द्रवर्मा उठने ही वाला था कि उसे वह प्रदेश झूमता-सा लगा। उसने आश्चर्य से एक तरफ देखा। सरकण्डे की तरह की किसी चीज़ ने उसको देखने न दिया। उसने उसे हटाकर जो देखा तो एक पक्षी को यह कहते सुना:-"हमारे लिए यह रात यहीं बिताना अच्छा है। भापवाली गरम पानी के नदी से जो हवा आ रही है, वह मुझे बहुत





परन्तु इससे पहले कि वह उनकी नजर में आये, और हजम कर लिया जाय, उसका वहाँ से उतर कर तुरन्त भाग जाना ही अच्छा था।

चन्द्रवर्मा यह सोच, पक्षी के पंखों में से चुप चाप नीचे उतर रहा था कि उसे आकाश चमकता सा लगा। उसने सिर ऊपर उठाया। उसने देखा धधकती कान्ति करता एक पक्षी फड़ फड़ करता, ठीक उसी जगह उतर रहा था, जहाँ वह था। तुरन्त वह अग्नि पक्षी उसके पास आया, जिसके बारे में जादूगरनी ने उसे बताया था, कालसर्प ने उसको आगाह किया था। वह अग्नि पक्षी, शंख मान्त्रिक का था।

अग्नि पक्षी को उतरता देख, भैरण्ड पक्षियों ने सिर ऊँचा करके उसको सलामी दी। अग्नि पक्षी ने ठीक सीधे उतरते हुए पक्षियों की भाषा में उनसे कहा-"मैं तुम्हें ही खोज रहा हूँ। अच्छा हुआ तुम यहीं मिल गये।"

"क्या काम है?" भैरण्ड पक्षी ने पूछा। अग्नि पक्षी ने, नीचे उतरकर, पँखों को सँवारते हुए कहा-

अच्छी लग रही है। दर्द जाता-सा लगता है।" पक्षी ने कहा।

उसी समय थोड़ी दूर पर एक और पक्षी का हाँ कहना उसे सुनाई दिया।

चन्द्रवर्मा को तुरन्त पता लग गया कि वह कहाँ था। जब वह सो रहा था तो बड़े-बड़े मोर व पक्षी उस पेड़ पर आए जिस पर वह सो रहा था। उनके पंखों के चलने से जो तूफान चला वह पेड़ की टहनियों पर से पत्थरों पर न गिर कर सौभाग्य से भैरण्ड पक्षी की पीठ पर गिरा। हाथी जितने बड़े पक्षी को, हो सकता है वह चींटी सा लगा हो।

"मेरे मालिक शंख ने मुझे एक काम सौंपा है। वह कोई कठिन काम नहीं है। बुढ़ापे से झुकी हुई एक जादूगरनी को उसने अपने पास लाने के लिए कहा है। परन्तु मैं यह काम स्वयं नहीं कर पा रहा हूँ। मैं दिन में देख नहीं सकता। रात में मेरा प्रकाश देखकर, वह जादूगरनी पहले ही सावधान हो जाती है। इसलिए, चुपचाप तुम अब उस जादूगरनी के पास जाओ. और उसको चोञ्च में पकड़कर मेरे मालिक के पास लाओ। मैं बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।"

यह सुनते ही भैरण्ड पक्षी कुछ रिवझे-"हम अब एक योजन भी नहीं उड़ सकते हैं। सूर्यास्त से हम समुद्रों में कितने ही द्वीप घूम घूम कर पेट भरकर आये हैं। पँखों की दर्द हटाने के लिए, हम गरम पानी की नदी के पास पड़े ऊँघ रहे हैं। आराम कर रहे हैं। कल रात, हम तेरी मदद कर सकते हैं। अब नहीं जायेंगे।"

अग्नि पक्षी ने सन्तोष से पंख फड़फड़ाये। ऐसी आवाज की कि



वह सारा प्रदेश गूँज उठा। "दिन में उस जादूगरनी को नहीं पकड़ा जा सकता है। वह स्वयं तो बहुत चालाक है ही। उसके पास कई बलवान सेवक भी हैं। कितने ही वर्षों से वह जादूगरनी रात में बिना आँखें मूँदे जीती आई है। परन्तु कुछ दिनों से उसकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गई है, इसलिए उतनी सावधान होकर नहीं रह पाती है, जितनी कि पहले थी। तुम कहीं छुपे रहो। यकायक अपनी चोञ्च से उसको पकड़ लो। वह मन्त्रोच्चारण नहीं कर सकेगी और इस तरह वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगी। उसके बाद सीधे अगर

तुम मेरे मालिक शंख के पहाड़ पर आ गये, और उस जादूगरनी को तुमने उसके सामने फेंक दिया तो वह उसे सजा देगा। और तुम दोनों को उचित ईनाम देगा। तुम्हें शिकायत करने का कोई मौका न देगा।" अग्नि पक्षी ने कहा।

"तेरे मालिक को मुझे बड़े ईनाम देने की जरूरत नहीं है, यह काफी है, अगर वह मुझे वह शक्ति दे कि जब मैं चाहूँ, तब सातों समुद्रों के सब द्वीपों में हो आऊँ।" एक भैरण्ड पक्षी ने कहा।

"मुझे इतना भी नहीं चाहिये। मेरे लिये यह काफ़ी है, अगर वह मुझे एक ऐसा मन्त्र सिखाये, जिससे मौत मेरे पास न आये। मैं कभी न मरूँ।" दूसरे भैरण्ड पक्षी ने कहा।

"ये पागल पक्षी सोच रहे हैं कि मान्त्रिक शंख कोई भगवान है।" यह सोच चन्द्रवर्मा हँसा।

भैरण्ड पक्षी ने जो माँगा था, वह सुन सिर हिलाकर अग्नि पक्षी ने पूछा- "क्या कल दिन के समय मेरी जगह एक बार आ सकोगे? बहुत दूर नहीं है। मौका लगा तो मैं अपना मालिक को भी तुम्हें दिखाने की कोशिश करूँगा।" अग्नि पक्षी ने कहा।

भैरण्ड ने यह मानते हुए सिर हिलाया। तुरन्त अग्नि पक्षी आकाश में उड़ा, बड़ी तेज़ी से उत्तर दिशा की ओर चला गया। भैरण्ड पक्षी थोड़ी देर इधर-उधर का बातें करते रहे, फिर चोञ्चों को भूमि पर रख वे सो गये।

(अभी है)



मुरगी की सैर

एक दिन एक मुरगी को बगुलों का चिल्लाना सुनाई दिया। जब उसने सिर उठाकर देखा, तो बगुलों का झुण्ड दक्षिण की ओर जा रहा था।

मुरगी पहले कभी अपने आङ्गन से बाहर न गई थी। उसे भी बगुलों की तरह जाने की सूझी। उसने और सुरगियों से कहा-"मैं भी दक्षिण की ओर जाऊँगी।" वह पंख फड़फड़ाकर भागी। आङ्गन पार करते ही सड़क आई। सड़क पर गाड़ियाँ थीं। मुरगी ने कुछ दूर सड़क पर जाकर एक बाग देखा। उसमें फूलों के पौधे थे। माली उन्हें पानी दे रहा था। थोड़ी दूर बाद सड़क खतम हो गई। वहाँ बैङ्गनों का खेत था।

शाम तक मुरगी घर वापस आ गई। उसने जो कुछ देखा था और मुरगियों को सुनाया।

चार महिने बाद, बगुले दक्षिण की तरफ़ से लौटे। उनमें से कुछ ने मुरगियों से मिलकर कहा-"हम दक्षिण से आ रहे हैं। वहाँ कितने ही द्वीप हैं। कितने ही समुद्र हैं।"

"हमारी मुरगी भी दक्षिण होकर आई है। वहाँ क्या है? जानना चाहते हो तो हमारी मुरगी से पूछो।" उन्होंने कहा।





आसिनो इछीरिया देश का राजा था। वह तब अविवाहित था। पर वह ओलिविया नाम की एक बड़े घर की लड़की से प्रेम करता था।

परन्तु ओलिविया राजा को पसन्द न करती थी। कुछ महीनों के अन्दर वह पिता और भाई को खो बैठी, इसे बहाना बनाकर, वह राजा के द्वारा भेजे गये दूतों को हमेशा दर्शन देने से इनकार करती रहती। " में सात साल तक शोक समुद्र से बाहर न निकलूँगी। मैं इन सात सालों में किसी को न देखूँगी।" उसने राज-दूतों को अपने नौकरों से कहलवाया।

क्योंकि सात साल तक वह अपनी प्रेयसी के पास प्रेम पत्र भी न भेज सकता था, इस कारण आर्सिनो महाराजा भी, शोक-समुद्र में गोते लगाने लगा।

राजा की यह हालत थी कि इल्लीरिया के पास एक जहाज डूब गया। उस जहाज़ में बहुत से यात्री थे। उसमें पेसलीन नगर के दो जुड़वे बच्चे थे। वे दोनों घण्टे भर फर्क से पैदा हुए थे। दोनों का चेहरा-मोहरा बिल्कुल एक जैसा था। छुटपन में उनको पहचानने के लिए, उनकी माँ, उन दोनों को अलग-अलग कपड़े पहनाती। उनमें बड़ा लड़का था, उसका नाम सेबास्टियन और दूसरी लड़की थी, उसका नाम क्योला था। समुद्र में जहाज़ के डूब जाने के कारण जहाज़ का कप्तान, कुछ ही लोगों को अपनी नाव में इल्लीरिया के तट पर ला सका। उनमें क्योला थी। पर सेबास्टियन न था।

क्योला इस बात पर खुश न हुई कि उसकी जान बच गई थी, पर हमेशा इसी



शोक में रहती कि उसका भाई समुद्र के हवाले हो गया था। जहाज़ के कप्तान ने उसे आश्वासन देते हुए कहा-" तुम्हारे भाई को कोई खतरा नहीं है। मैंने स्वयं उसको एक मस्तूल पकड़े, तट की ओर तैरते देखा है। वह जाकर ज़रूर कहीं न कहीं लगेगा। परन्तु तुम स्त्री हो, अकेली हो, इसलिए आगे की सोचो। तुम्हें कोई आश्रय दिखाकर ही मैं जाऊँगा।"

जहाज के कप्तान की बात सुनकर क्योला का कुछ होसला बढ़ा। उसने कप्तान से पूछा-"यह क्या देश है? इस देश का राजा कौन है?" आर्सिनो का नाम बताये जाने पर, क्योला ने कहा-"जब कुछ समय पहले मैंने इनका नाम सुना था तब इनकी शादी न हुई थी।"

"वह तो एक लम्बी कहानी है।" जहाज़ के कप्तान ने उसकी प्रेम कहानी, और ओलिविया के बारे में बताया।

"तो उसके पिता और भाई भी गुजर गये! में भी भाई के खो जाने पर दुखी हूँ। इसलिए अगर मैं उनकी सेविका बन गई, तो हम दोनों एक दूसरे को आश्वासन दे सकेंगी।"

"यह न हो सकेगा। भाई के मृत्यु के शोक में ओलिविया अजनबियों की शक्ल ही नहीं देख रही है।" कप्तान ने कहा।

"अगर यही बात है तो राजा के यहाँ, मर्द का वेष धारण कर नौकरी की जाय तो कैसे रहेगा? अकेली लड़की के लिए मर्द के वेष से तो कोई अच्छा कवच नहीं है।" क्योला ने कहा।

जहाज का कप्तान इसके लिए आवश्यक सहायता देने के लिए मान गया। उसने उसको थोड़ा धन देकर कहा-"ठीक वैसे ही कपड़े खरीद कर लाओ, जो

मेरा भाई पहना करता था।" जहाज़ के कप्तान ने वैसा ही किया।

उसके खरीदे हुए कपड़े पहनने के बाद, क्योला ठीक हूबहू सेबास्टियन की तरह दिखाई देने लगी। अहाज़ का कप्तान उसे साथ लेकर आर्सिनो महाराज के पास गया। "इस युवक का नाम सिज़ारियो है। हमारा जहाज समुद्र में डूब गया है, मैं जैसे तैसे इसे बचाकर यहाँ तक लाया हूँ। अच्छे खानदान का यह लड़का आपकी सेवा करता, यहीं आराम से रह जायेगा।" उसने कहा। राजा युवक को देखकर प्रसन्न हुआ। वह उसको अपने यहाँ रखने के लिए मान गया।

क्योला जब से राजा की नौकरी में लगी, तभी से राजा की आन्तरङ्गिक-मित्र बन गई। राजा उसके सामने ओलिविया के प्रति अपने प्रेम और उसकी निष्ठुरता पर आँसू बहाता। उसका प्रेम ठुकरा दिया गया था। इसलिये वह किसी चीज़ में भी दिलचस्पी न दिखाता। हमेशा प्रेम गीत सुनता समय बिता रहा था। जबसे वेष बदलकर, क्योला उसकी नौकरी में आई थी, तब से वह उससे गप्पें लगाता रहता।



यह क्योला के लिए एक खतरा-सा हो गया। क्योंकि उसे भी वह प्रेम की बीमारी लगी और वह भी राजा से प्रेम करने लगी। ओलिविया से प्रेम करके राजा जितना तड़प रहा था, वह भी राजा से प्रेम करके, उतनी ही तड़पने लगी। वह सीधी तरह तो अपना प्रेम व्यक्त करना नहीं चाहती थी, फिर भी घुमा फिरा कर वह अपना प्रेम जताती आई थी।

एक दिन राजा ने कहा-"प्रेम करना पुरुषों को ही आता है, स्त्रियों को नहीं। इसीलिए ओलिविया मेरा प्रेम समझ नहीं पा रही है।"

"महाराज, यह न कहिये। मेरी एक बहन है। उसे एक पुरुष से प्यार है। उसने अपने प्रेम को अपने हृदय में रख रखा है। वह प्रेम उसको इस तरह खा रहा है, जिस तरह कीड़ा फूल को निगलता है। फिर भी वह हँस मुख बनी फिरती है।" क्योला ने कहा।

वे इस तरह बातें कर रहे थे कि ओलिविया के पास गया राजा का दूत वहाँ आया। उसने कहा कि ओलिविया ने कहा है कि





सात वर्ष तक किसी का मुख न देखूँगी। और मेरे पास किसी को न भेजा जाय।

"जो भाई के लिए इतना मातम मना रही है, उसका मन कितना कोमल होगा। अगर उस जैसी स्त्री को मुझ पर प्रेम हो जाये तो कहना ही क्या?" राजा ने कहा। फिर उसने क्योला की ओर मुड़कर कहा- "सिज़ारियो, इस बार तुम्हें मेरा दूत बनकर ओलिविया के पास जाना होगा। अगर तुम जैसे युवक को भेजा जाय तो वह कम से कम मिलकर दो चार बातें तो कहेगी।"

"अगर बातें करें, तो मुझे क्या कहना होगा, महाराज?" क्योला ने पूछा।

"तुम उनसे साफ साफ कहो, कि मैं उनसे कितना प्रेम करता हूँ। कैसे उनके लिए तड़प रहा हूँ।" राजा ने कहा।

उसे यह काम बिलकुल पसन्द न था। फिर भी क्योला, ओलिविया के घर गई। ओलिविया की दासी ने दरवाजा खोलकर बताया- "मालकिन की तबीयत ठीक नहीं है।"

"मुझे मालूम है, पर मुझे उन्हें देखना ही है।" वयोला ने कहा।

"सो रही हैं।" दासी ने कहा ।

"इसीलिए बात करनी है।" क्योला ने कहा।

दासी ने जाकर ओलिविया से कहा- "मालकिन! आपको देखने के लिए कोई नौजवान आया हुआ है। जाने के लिए बहुत कहा; पर वह जा नहीं रहा है। बहुत जिद्दी मालूम होता है।"

यह ज़िद्दी कौन था, ओलीविया ने देखना चाहा। इसलिए उसने कहा- "उसको अन्दर आने दो।"

क्योला ने नाटक के नायक की तरह अभिनय करते हुए कहा- "हे जगदैक

सुन्दरी, भुवनैक मोहिनी क्या आप ही इस घर की मालकिन हैं? मैं इस घर की मालकिन के लिए एक सन्देश लाया हूँ। यह सन्देश बहुत मेहनत से तैयार किया गया है। उसे मैंने कण्ठस्थ भी किया है।"

"आप आ कहाँ से रहे हैं?"

"मैंने इस प्रश्न का उत्तर कण्ठस्थ नहीं किया है।" क्योला ने कहा।

"क्या आप विदुषक हैं?" ओलिविया ने पूछा।

"यह तो मानता हूँ कि मैंने वेष बदल रखा है। पर मैं विदूषक नहीं हूँ।" क्योला ने कहा-"अगर आप ही इस मकान की मालकिन हो तो मैं आपका मुहँ देखना चाहता हूँ। जरा परदा तो हटाइये।" ओलिविया ने मुँह का परदा हटा दिया। हुआ यह कि वह ओलिविया, जो राजा का प्रेम ठुकरा रही थी दो तीन क्षण में ही उस युवक से प्रेम करने लगी। इस आकस्मिक प्रेम के कारण वह यह भी भूल गई कि उसने निश्चय कर रखा था कि सात साल तक किसी का मुँह न देखेगी।

"आप में सौन्दर्य तो बहुत है। पर हृदय नहीं है। मेरे मालिक आपके



लिए तड़प रहे हैं। तप रहे हैं। आप उनकी क्यों नहीं सुनतीं?" क्योला ने पूछा।

"मैं उनसे प्रेम नहीं करती। वे भी यह जानते हैं। फिज़ूल तङ्ग कर रहे हैं।" ओलिविया ने कहा।

"अगर मैने ही आपसे प्रेम किया होता तो आपका नाम सब जगह चिल्लाता फिरता। जबतक आपका मन न लगता तबतक साँस न लेता।" क्योला ने कहा।

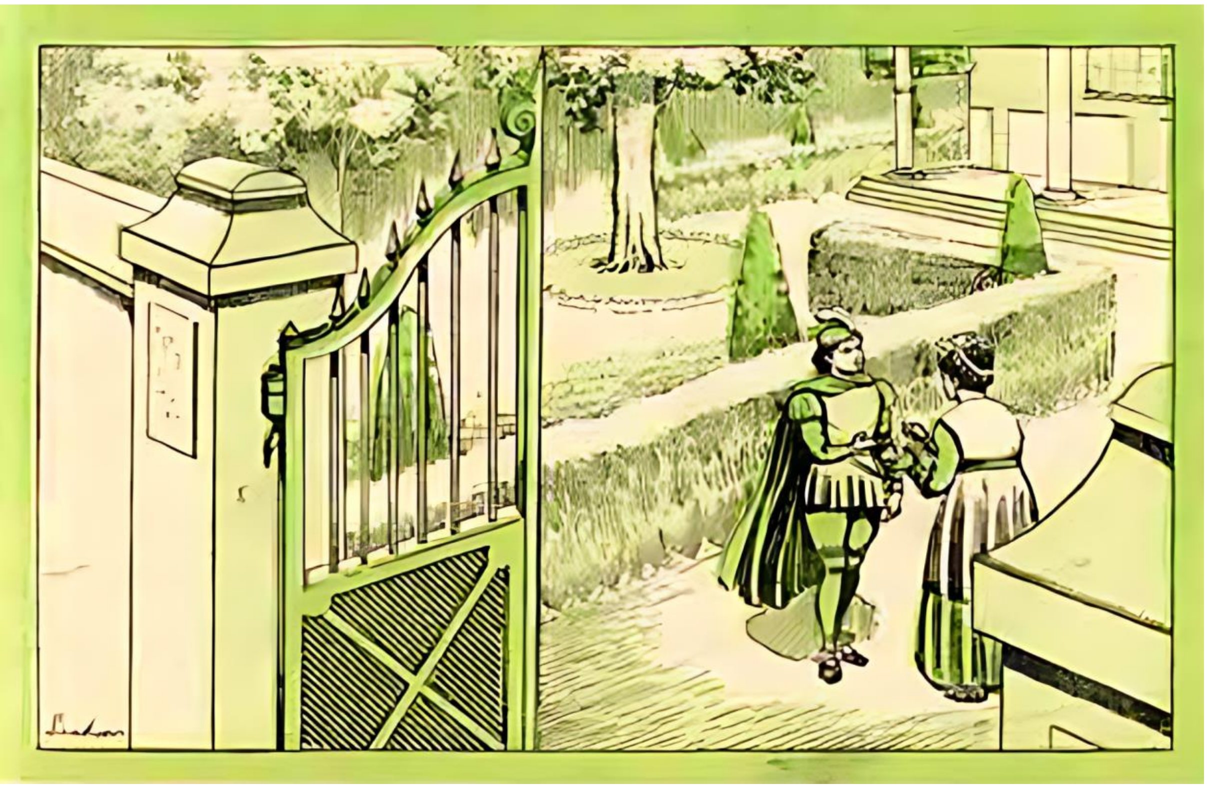
"अच्छा, आप जाकर अपने राजा से कहिये कि मैं उनसे प्रेम नहीं कर सकती हूँ। वे यह सुनकर क्या कहते हैं, यह

मौका मिलने पर मुझ से आकर कहिये।" ओलिविया ने कहा।

क्योला के बाहर चले जाने के बाद अपनी दासी को उसने बुलाकर कहा-"अभी जो युवक गया है वह अपनी अंगूठी यहाँ छोड़ गया है। यह उन्हें दे दो।" कहकर उसे भेजा। ओलिविया इस तरह यह बताना चाहती थी कि वह उससे प्रेम करती थी।

दासी के अंगूठी लाकर देने पर क्योला सब समझ गई। क्योंकि वह अपने साथ कोई अंगूठी न लायी थी, न उसने उसे ओलिविया के पास छोड़ा ही था। "अरे अरे, मेरे इस भेस ने ओलीविया को कितना धोखा दिया है। जितना मैं राजा के लिए तड़प रही हूँ उतना ही मेरे लिए ओलिविया तड़प रही हैं।" उसने मन ही मन सोचा।

प्रेम अन्धा होता है। क्योला ने वापस आकर राजा से कहा-" महाराज, मैंने ओलिविया से बातचीत की। उन्होंने साफ साफ कह दिया है कि वे आपसे प्रेम नहीं कर सकतीं।" उसके यह कहने पर भी राजा निराश न हुआ।



"सिज़ारियो, तुमने आभी विजय पा ली है। उन्होंने तुम्हें देखकर तुमसे बातचीत तो की। अगर तुम कल फिर गये तो उनका मन भी मेरी ओर मोड़ सकोगे।"

इसके बाद उसने एक लोक गीत गाने के लिए कहा। वह गीत सुनते ही क्योला आँसू बहाने लगी।

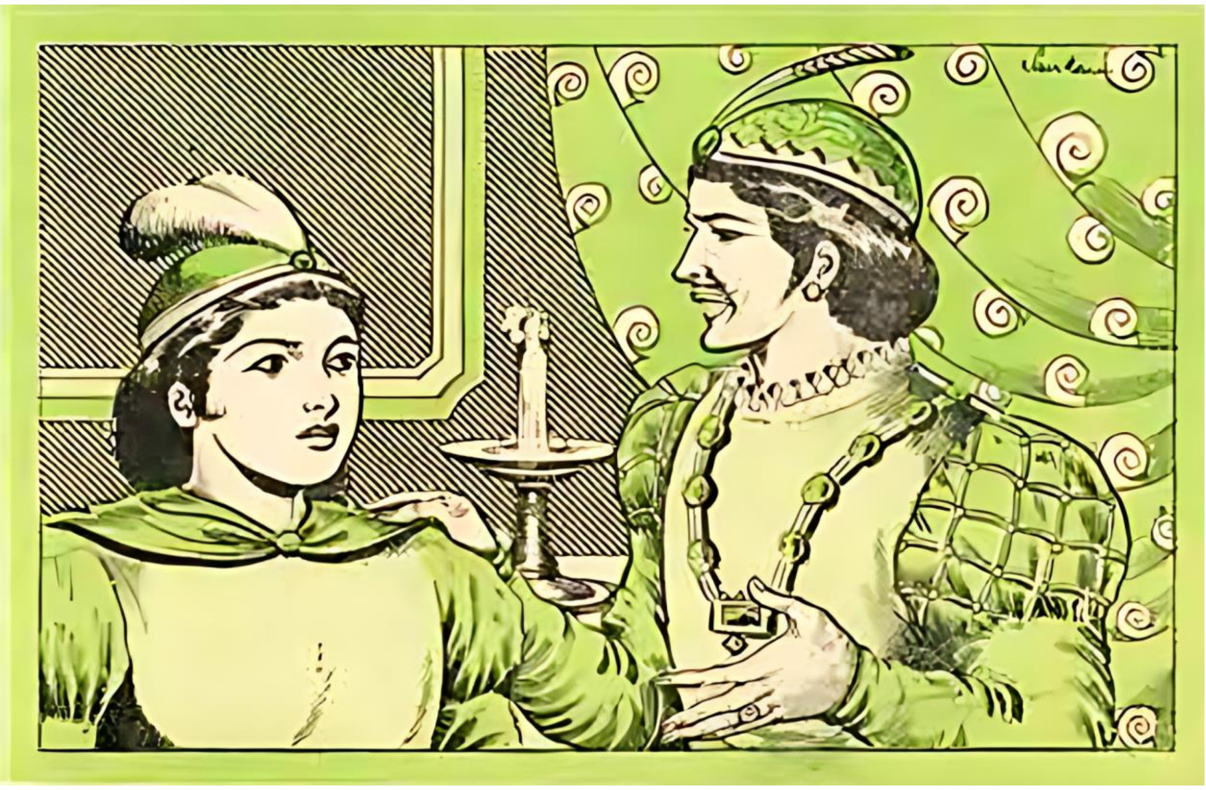
"यह क्या सिजारिया? क्या इस छोटी उम्र में तुम्हें भी इस प्रेम सर्प ने काटा है?" राजा ने आश्चर्य से पूछा। क्योला ने "हाँ" कहा। "तो वह स्त्री कौन है? कैसी है? मुझसे क्यों नहीं कहा?" राजा ने पूछा।

"महाराज! वह आपकी उम्र की है। और आप जैसी ही है।" क्योला ने कहा। यह सुन राजा हँसा। "नादान है! कुछ नहीं तो मेरी उम्र की लड़की से भी क्या प्रेम करना है!" उसने सोचा।

अगले दिन जाते ही दासी उसको ठीक ओलिविया के पास जल्दी जल्दी ले गई।

"मैं अपनी राजा की ओर से फिर प्रेम भिक्षा माँगने आया हूँ।" क्योला ने कहा।

"तुम उनकी ओर से बात करोगे तो मैं नहीं सुनूँगी। अगर किसी और की तरफ





यह व्यक्ति भी राजा की तरह ओलिविया से प्रेम कर रखा था। उसने दासियों से मालूम कर लिया था कि ओलिविया उसके प्रेम को ठुकराकर राजा के दूत सिज़ारियो से प्रेम करने लगी थी। इसलिए वह वहाँ आया था। जब उस आदमी ने तलवार निकालकर युद्ध के लिए ललकारा तो क्योला का दिल थम सा गया। वह उससे यह कहने वाली ही थी कि वह पुरुष न थी कि इतने में वहाँ एक आदमी आया।

से कहो तो मैं सुनने के लिए खुशी खुशी तैयार हूँ।" ओलिविया ने कहा।

यह सुनते ही वयोला की मुख सिमट सा गया। यह देख ओलिविया ने कहा-"तुम मुझे क्यों ऐसे देखते हो? मैं तुमसे प्रेम कर रही हूँ। मैं इस प्रेम को छुपा भी नहीं पा रही हूँ।"

"तुम्हारा प्रेम निरुपयोगी है, क्योंकि इस जन्म में किसी से प्रेम नहीं करने जा रहा हूँ।" कहती कहती क्योला जल्दी जल्दी चली गई। वह अभी थोड़ी दूर गई थी कि नहीं कि किसी ने उसको द्वन्द युद्ध के लिए ललकारा।

उसने तलवार वाले आदमी से कहा-"अगर इस युवक ने आपका अपमान किया है तो उसके लिए में जिम्मेवार हूँ। आप मुझ से युद्ध कीजिए।" कहकर उसने भी तलवार निकाली। फिर सिपाहियों ने उसको आकर पकड़ लिया। यह सब क्योला को स्वप्न की तरह लगा। वह तुरन्त जान गई कि उसकी रक्षा करनेवाला कौन था, और उसको क्यों पकड़कर ले गये थे।

उसने क्योला की ओर मुड़कर कहा-"देखा, तुम्हारे कारण मेरी यह स्थिति हुई है। मैंने कहा भी था कि मैं इल्लीरिया में पैर न रखूँगा, पर तुम मानी नहीं।

कुछ साल पहले मैने इस देश के राजा के भांजे को युद्ध में घायल किया था। इसलिए मुझे देश से निकाल दिया गया था। अब बिना बहुत सा धन दिये ये न छोड़ेंगे। मुझे वह धन वापिस दो जो मैंने दिया था।"

यह वह कप्तान था जिसने सेबास्टियन को समुद्र में बचाया था। इल्लीरिया पहुँचते ही उसने उसे अपना बटुआ देकर कहा थाः जो तुम चाहो खरीद लो।" पुरुष वेष में क्योला को देखकर वह सोच रहा था कि वह सेबास्टियन ही था।

"आप कौन हैं? मैं नहीं जानता। आपने कभी मुझे पैसा नहीं दिया।" क्योला ने कहा, सिपाही उसको पकड़कर ले गये। जाते-जाते उस व्यक्ति ने क्योला से कहा-"मैंने कभी न सोचा था कि सेबास्टियन एक दोस्त को इस प्रकार दगा देगा।" यह कहकर वह चला गया।

इस बात से पता लगता था कि उसका भाई इल्लीरिया में था। अगर वह वहीं खड़ी रही तो वह आदमी फिर कहीं तलवार लेकर न



ललकारे। वह भी जल्दी जल्दी महल में चली गई।

तलवारवाला आदमी वही मँडराता रहा। उसे ऐसा लगा कि थोड़ी देर बाद उसका शत्रु उस तरफ आ रहा था। इस बार क्योला न आई थी, पर आया था उसका भाई सेबास्टियन। "बिना युद्ध किये भाग गये। और अब फिर आये हो। कम से कम इस बार तो तलवार निकालो।" कहते हुये उस आदमी ने सेबास्टियन के गाल पर एक चपत लगाई। सेबास्टियन डरपोक न था। जिसने उसको फिज़ूल मारा था, उसको उसने इतनी जोर से मारा कि उसकी



हड्डियाँ भी हिली होंगी। दोनों ने तलवारें निकालीं।

अपने घर के पास इस झगड़े को होता देख ओलिविया जल्दी-जल्दी बाहर आई, और उनको उसने अलग किया। सेबास्टियन का हाथ पकड़कर वह अन्दर ले गई। उसका ख्याल था कि वह सिजीरियो था। पर उसने देखा कि सेबास्टियन में कुछ फर्क था। उसने पहले की तरह नाक भौ न चढ़ाई। हाथ बढ़ाने पर उसने उसका हाथ भी पकड़ा। प्रेम से उसकी तरफ देखा भी।

सेबास्टियन यह न जान सका कि एक स्त्री, जिसने उसको कभी न देखा था, क्यों उससे इतने प्रेम से बातें कर रही थी। उसने सोचा कि शायद उसका दिमाग फिरा हुआ था। परन्तु और बातों में वह बिल्कुल पागल न लगती थी। दासी उसकी आज्ञाओं का इस तरह पालन कर रही थी, जैसे वह बिल्कुल ठीक हो।

अपने प्रेमी को अच्छी मूड़ में देखकर ओलिविया ने कहा-"और देरी क्यों की जाय! अभी पुरोहित को बुलाती हूँ। हम दोनों का विवाह हो जाये।"

वह बड़े घर की थी। बहुत सुन्दर थी। इसलिए सेबास्टियन इसके लिए मान गया।

विवाह हो गया। यह शुभ वार्ता अपने मित्र कप्तान के पास कहने सेबास्टियन गया। थोड़ी देर बाद राजा क्योला के साथ अपने आप ओलिविया के घर गया। वह उस घर के सामने गया था कि सिपाही कप्तान को वहाँ पकड़कर लाये।

कप्तान ने राजा से कहा-"इस युवक के कारण मैंने इस देश में कदम रखा। मैंने इसे समुद्र में बचाया। और अब तीन महीनों से इसकी देख-भाल कर रहा हूँ।

इस कृतघ्न को मैंने अपना सारा पैसा दिया। जुर्माना देने के लिए जब रुपया माँगा तो इसने देने के इनकार कर दिया।" कहते हुए मर्द के भेष में उसने क्योला को दिखाया।

राजा ने कप्तान से कहा-"क्या तुम्हारी अक्कल मारी गई है? यह लड़का तीन महीने से मेरे यहाँ नौकरी कर रहा है। और तुम कहते हो कि तुम इसकी देख-भाल कर रहे हो।"

इतने में ओलिविया बाहर आई। उसने राजा के पास क्योला को खड़ा देख सोचा कि यह वही युवक है, जिसके साथ उसने विवाह किया था। वह उसके साथ प्रेम से बात करने लगी।

राजा को यह देख गुस्सा आया कि सिज़ारियो ने उसे धोखा दिया था, वह उसका दूत बनकर गया और उसकी प्रेयसी से ही प्रेम करने लगा। "तुम्हारी खबर लेता हूँ। आओ, मेरे साथ आओ।" उसने क्योला से कहा।

"महाराज, अगर आपने मेरे प्राण भी लिए तो मैं खुशी-खुशी मर जाऊँगा।" क्योला ने कहा।



"मेरे सिज़ारियो को कहाँ ले जा रहे हैं?" ओलिविया बिलखने लगी।

"मैं उनके साथ जारहा हूँ, जिसको मैने सबसे अधिक प्रेम किया है।" क्योला ने कहा।

"थोड़ा ठहरिये। हम दोनों का अभी अभी विवाह हुआ है। जिसने शादी की थी वह पुरोहित भी अभी नहीं गया है।" ओलिविया ने कहा।

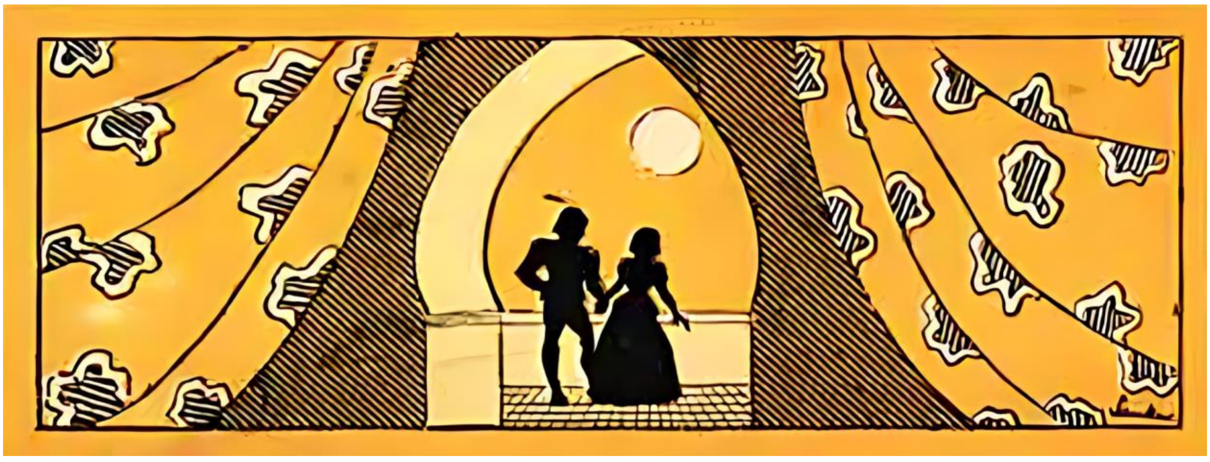
"यह बिल्कुल झूठ है, मैंने आपसे शादी नहीं की है।" क्योला ने कहा।

ओलिविया ने पुरोहित को बुलवाया। पुरोहित ने कहा कि उसने उन दोनों का विवाह करवाया था। राजा ने उसकी गवाही पर विश्वास कर लिया। उसने क्योला से कहा-"मैंने कभी न सोचा था कि तुम मुझे यों धोखा दोगे, मुझे कभी अपना मुँह न दिखाओ।" राजा ने कहा।

इतने में सेबास्टियन सामने से आया। ठीक एक जैसे दीखनेवाले सेबास्टियन और क्योला को देखकर, राजा, ओलिविया, पुरोहित, सबको आश्चर्य हुआ।

परन्तु भाई को देखते ही क्योला ने कहा कि वह स्त्री थी और पुरुष का वेष धारण किये हुये थी। सेबास्टियन ने कप्तान को पहचानकर उसको उसका बटुआ दिया। राजा को सिर्फ यही नहीं पता लगा कि उसका नौकर निर्दोष था, बल्कि यह भी पता लगा कि वह उससे इतने दिनों प्रेम भी कर रही थी।

ओलिविया ने शादी कर ही ली थी। इसलिए राजा ने उसी पुरोहित द्वारा अपनी शादी क्योला से करवाई, उसके बाद सब सुखपूर्वक रहने लगे।



पत्नी-गुलाम



विक्रमार्क तो हठी था ही। फिर वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा, और मौन हो श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा-"राजा, मनुष्य चञ्चल स्वभाव के होते हैं। उनमें कभी उदार भाव, उदात्त उद्देश्य आते भी हैं तो वे हमेशा उनके मन में नहीं रहते। समुद्र की तरङ्गें, जिस प्रकार आकाश की ओर उठती हैं और फिर स्वतः गिर जाती हैं, उसी तरह उनके उद्देश्य, आदर्श भी काफूर हो जाते हैं। यह दिखाने के लिए जिह्वल नाम के युवक की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यह कहानी सुनानी शुरू की।

किसी समय, मरुकच्छप नगर में जिह्वल नाम का वैश्य नवयुवक रहा करता था।

वह धनी था। सुन्दर था। जब उसकी उम्र के लड़के पत्नी ढूँढ़ते फिरते थे तब वह मेहनत करके व्यापार किया करता। थोड़े दिनों में ही वह व्यापार आदि में बहुत चतुर और समर्थ हो गया। उस नगर के व्यापारी, जिनमें से कई उससे उम्र में दुगने थे, उसकी सलाह पर निर्भर रहते। उसकी कीर्ति सारे नगर में फैल गई।

जिह्वल को, शादी में लड़की देने के लिए कितने ही करोड़पति कोशिश कर रहे थे। कितनी ही सुन्दर कन्यायें उससे विवाह करने के लिए उतावली हो रही थीं। परन्तु जिह्वल विवाह के बारे में न सोच रहा था।

"मेरी उम्र अभी पच्चीस वर्ष की भी नहीं है। यवनों से में व्यापार करने की सोच रहा हूँ। व्यापार के चल पड़ते ही मैं शादी के बारे में सोचूँगा।" जिह्वल कहता आया था।

यवन देश ले जाने के लिए उसने एक नौका तैयार करवाई। उसमें बहुमूल्य चीजें चढ़ाई गई। अच्छा मुहूर्त देखकर, अपने लोंगों को लेकर जिह्वल नौका में यवन देश के लिए निकल पड़ा। जिह्वल के नाविक पहली बार उस तरफ जा रहे थे।



कुछ सप्ताह बीत गये। नौका में पीने का पानी, खाने की सामग्री खतम हो गई। उनको फिर से लेने के लिए वे नौका को एक किनारे पर ले गये। जिह्वल और उसके आदमी किनारे पर उतरे और मनुष्यों को खोजने लगे। कुछ दूर जाने के बाद वे एक ऐसे प्रदेश में पहुँचे, जहाँ पहाड़, जङ्गल आदि थे। वहाँ जङ्गली लोग थे। वे अपने ईलाके में किसी को न आने देते, और जो आते उन्हें जिन्दा बाहर न जाने देते।

जिह्वल के लोग अभी उस ईलाके में कुछ दूर ही गये थे कि न जाने कहाँ से

उन पर बाण बरसने लगे। उस वर्षा के कारण बहुत से लोग मर गये, जो बचे खुचे, पीठ मोड़कर आगे जा रहे थे कि वे उन जङ्गलियों के भालों के शिकार हुये। जिह्वल पासवाले गढ़े में गिरा और जैसे तैसे जङ्गलियों के बाण और भालों का शिकार होने से बच गया। उसके लोगों में दो ही थोड़ा बहुत घायल होकर नौका तक वापस पहुँच सके। शायद कोई और भी आ सके, यह सोचकर उन्होंने दिन भर प्रतीक्षा की। जब कोई न आया तो उन्होंने सोचा कि सब भर मरा गये थे। वे नौका को भरुकच्छप नगर ले गये।

जिह्वल ने उस समय अपने को बचा तो लिया था। पर ऐसा लगता था कि उस बीयाबान पहाड़ी इलाके में बेमौत मरना ही होगा। उसने एक पहाड़ी गुफा में पनाह ली। उसे आस-पास न कोई खाने की चीज़ ही दिखाई दी, न पानी ही। उसे डर था कि अगर उन्हें ढूँढ़ता वह दूर गया तो जङ्गली उसे मार देंगे। वह थकान और भूख के कारण बेहोश गिर गया।



जब उसे होश आई, तो उसके पास एक जङ्गली स्त्री खड़ी थी। उसकी उम्र, सोलह सत्रह साल की होगी। जङ्गली स्त्रियों की तरह उसके गले में तरह तरह की मालायें थीं।

उसको देखते ही पहले जिह्वल डरा। पर जब वह उसको देख कर मुस्कराई, तो उसका डर जाता रहा। फिर उसको लगा कि वह बहुत ही सुन्दर थी। उन भद्दे आभूषणों के होने पर भी, जिह्वल को लगा कि उसने उतनी सुन्दर स्त्री पहले कभी कहीं न देखी थी।

वह लड़की भी जिह्वल को देखकर जान गई कि वह बहुत सुन्दर था। वह उससे प्रेम करने लगी। वह जानती थी कि अगर उसकी जाति वालों ने उसे देखा तो वे उसे मार देंगे। उसका भोजन और जल की खोज में उस प्रदेश में घूमना फिरना खतरे से खाली न था। इसलिये ईशारा करके उसने उसे एक पहाड़ी ईलाका दिखाया। वह निर्जन जगह थी वहाँ जिह्वल के नहाने के लिए, पीने के लिए अच्छा पानी था। आराम करने के लिए छाया थी। उसको वहाँ ठहरने के





लिए कहकर, वह लड़की उसके लिए भोजन लाने के लिए चली गई। थोड़ी देर बाद यह भोजन लाई। अन्धेरा होने तक वह उसके साथ रही। उसको उसने तरह तरह के फूलों की मालायें बनाकर दीं। सुन्दर पक्षी दिखाये। उसने रात को, उसे सोने के लिए अच्छी जगह दिखाई। यह ईशारा करके कि वह फिर वापस आयेगी, वह चली गई।

उन दोनों की एक भाषा न थी। एक जाति न थी। तौर-तरीके न थे। तो भी जिह्लल उससे प्रेम करने लगा।

जब तक वह उसके साथ रही वह अपने कष्ट भूल गया। उसके जाते ही, उसके कष्ट, मानों दुगने होकर उसको सताने लगे। इस डर से कि कहीं वह फिर शायद दिखाई ही न दे, उसने आँखे मींची। अगले दिन उसका मुँह देखते ही उसका भय, कष्ट, सब काफूर होगये, और उसे वर्णनातीत आनन्द हुआ।

जिह्लल ने तीन महीने, उस लड़की के रक्षण, मरण, पोषण में काट दिये। प्रकृति के सौन्दर्य को देखने का आनन्द, स्वादिष्ट चीज़ों के खाने का आनन्द, ठण्डे नाले में स्नान कर, पहाड़ की साफ हवा लेने का आनन्द, उसने अपने जीवन में पहली पहली बार पाया था। अमीरी थी, पर इनका आनन्द न था।

यही नहीं, जिह्लल पहली बार किसी को प्रेम कर रहा था। तब तक किसी ने उसके कष्ट सुखों में हिस्सा न लिया था। वह मौका इस जङ्गली लड़की के कारण मिला। वह अपने लोगों से दूर था। पास एक कौड़ी न थी, जान खतरे में थी। फिर भी वह उस लड़की की कृपा के कारण ऐसे सुख पा रहा था, जो शायद स्वर्ग में भी न मिलें।



उन तीन महीनों में वे एक दूसरे की भाषा जान गये। एक दिन जिह्वल ने उस लड़की से कहा-"मैं यहाँ इस तरह कब तक रहूँ? मेरे भी घर वगैरह हैं। पर अगर तुम न हो, मैं वह सब कुछ नहीं चाहता। मेरे साथ आकर, मुझ से शादी कर लो। तुम्हें वे सुख दूँगा, जो महारानी को भी मयस्सर नहीं होते।"

वह इसके लिए मान गई। एक दिन अन्धेरा हो जाने के बाद, वे दोनों वह जङ्गली ईलाका छोड़कर समुद्र के किनारे गये। उन्हें सौभाग्य से एक नौका वहाँ मिली। जिह्वल अपनी पत्नी को लेकर, उस नौका में भरुकच्छप ले गया।

भरुकच्छप नगर का बन्दरगाह पास ही था कि उसमें एक आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। उसे ऐसा लगा, जैसे अभी सो कर उठा हो। उसके मन में तब तक जो ख्याल थे, वे सब गायब हो गये। वह फिर से मामूली व्यापारी हो गया। तीन महीने व्यापार करने से उसको कितना नुक्सान हुआ था, उसने हिसाब लगाया। समुद्र में जब कभी गया था वह साथ कुछ न कुछ माल लाया था। इस बार वह अपने साथ क्या ला रहा था? एक जङ्गली लड़की। अगर उसको गुलाम के तौर पर बेच दिया गया, तो काफी धन मिलेगा, और इस तरह उसका नुक्सान कुछ कम हो सकेगा। इसके सिवाय उस लड़की का उसके लिए कोई लाभ न था।

बन्दरगाह में घुसते ही, जिह्वल ने उस लड़की को व्यापारियों को बेचने के लिए दिखाया। यह देखते ही वह जोर से चिल्लाई-"मुझे मत बेचिये। मैं गर्भवती भी हूँ।"

"तुमने यह क्यों नहीं कहा?" कहकर जिह्वल ने उसे और उसके गर्भवाले बच्चे के साथ, दुगनी कीमत पर गुलाम के रूप में बेच दिया।

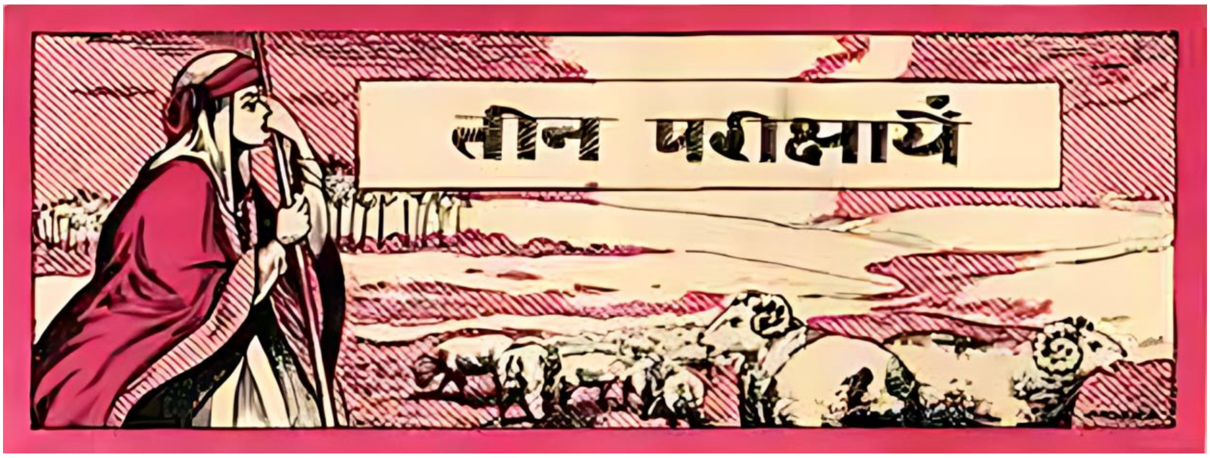
बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा- "राजा! जिह्वल ने ऐसा काम क्यों किया? उस लड़की ने उसकी जान बचाकर उससे प्रेम करके, उसका उपकार ही किया था। अपकार तो किया न था। क्या यह झूठ है कि उसने उससे प्रेम किया था? क्या उसको साथ इसीलिए लाया था ताकि वह उसे बेच सके? या प्रेम... केवल दगा ही है? या प्रेम की बातें झूठ हैं? अगर तुमने इन प्रश्नों का उत्तर जानबूझकर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

"उस कुप्रदेश में जिह्वल ने सचमुच उस लड़की से प्रेम किया था। अगर वह अपने देश वापस न आता, जिन्दगी भर वहीं रह जाता तो वह उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता। प्रेम दगा बिल्कुल नहीं है। वह आदमियों को अच्छा ही बनाता है, बुरा नहीं। परन्तु स्वार्थमय सभ्यता में प्रेम उसी प्रकार सूख जाता है, जिस प्रकार पानी के बगैर पौधा। जिह्वल अगर अपना प्रेम रखना चाहता था, तो स्वार्थमय जीवन को छोड़कर उसे जङ्गल में ही रहना चाहिये था। दोनों का चाहना ही उसकी गलती थी। इसीलिए यद्यपि उसने वादा किया था कि वह उसे महारानी बनायेगा, उसने उसे गुलाम बनाकर बेच दिया।" बिक्रमार्क ने जवाब दिया।

राजा का इस प्रकार मौन भङ्ग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)





[३]

कनाना छोटा था, पर उसने रशीद की आँखों में खूब धूल झोंकी। वह सोच रहा था कि सफेद ऊँट तयाफ़ की ओर गया था। वे लोग, जो तयाफ़ से आते हुए रास्ते में कनाना से मिले थे रशीद के आदमियों से कहेंगे कि उन्होंने दो ऊँट देखे थे। और उसका भाई, दस दिनों में अपनी टोली में जा ही मिलेगा।

परन्तु कनाना को अब अकेले दूसरी परीक्षा में उत्तीर्ण होना था। यह कोई साधारण परीक्षा न थी। फारस से जो रास्ता मक्का जाता था, वह बरसात में तो इतना भयङ्कर न था, कई जगह पानी और ऊँटों के लिए घास मिल जाती थी। रास्ते में सफर करनेवाले भी मिल जाते। परन्तु गरमियों में वह रास्ता निर्जन रहता। कहीं पानी नहीं मिलता। कुयें भी सूख जाते थे। कहीं तिनका भी नहीं दिखाई देता। ऐसे रास्ते पर कनाना जा रहा था। उसने जहाँ और पड़ाव करते थे, पड़ाव नहीं किया। काले ऊँट पर वह आगे बढ़ता गया।

चार दिन गुज़र गये, कनाना प्यास से मरा जा रहा था। उसकी आँखों को भ्रम होने लगा था। उसे ऐसी जगह पानी दीखने लगा था जहाँ पानी न था, मैदान न थे। नगर दिखाई देने लगे, जहाँ नगर न थे। परन्तु वह जानता था कि वे सब भ्रम थे। खलीफा का काला ऊँट भी उसी हालत में था।

ऊँट को ऐसा लगा जैसे दूरी पर एक कुँआ दीख गया हो। वह जैसे तैसे मरते

जीते कुँए के पास गया। कुँए में एक बुन्द पानी न था। जो रेत बाहर थी वहीं अन्दर थी। ऊँट बेहोश गिर गया।

कनाना उस पर से उतरा। उसे नींद आ गई थी। अगर उसने आँखें मूँद लीं तो फिर न उठेगा, यह यह जानता था। अपनी रोटी ऊँट के मुख के पास रखकर वह लड़खड़ाता आगे बढ़ा। चल तो रहा था, पर पूरी तरह उसे होश न थी। वह मन ही मन सोच रहा था कि बसरा उतनी दूर नहीं रह गया था। उसे डर था कि ऊँट के साथ वह भी रास्ते में गिर जायेगा।

सूर्य अस्त हो गया। अन्धेरा हुआ। अन्धेरे में कनाना को दूरी पर कहीं थोड़ी-सी रोशनी दिखाई दी। उसकी जान में जान आ गई। वह सोता जागता, आँखें खोलता, मींचता डगमगाता चला जा रहा था।

यकायक उसको सामने कुछ छाया दिखाई दी। वे तम्बू थे । खालीद की सेना वहीं थी। किसी सैनिक ने उससे कुछ पूछा। कनाना ने कहा- "मुझे जल्दी खालीद के डेरे में ले जाओ। मैं खलीफा के पास से चिट्ठी ला रहा हूँ।" फिर वह बेहोश गिर गया।



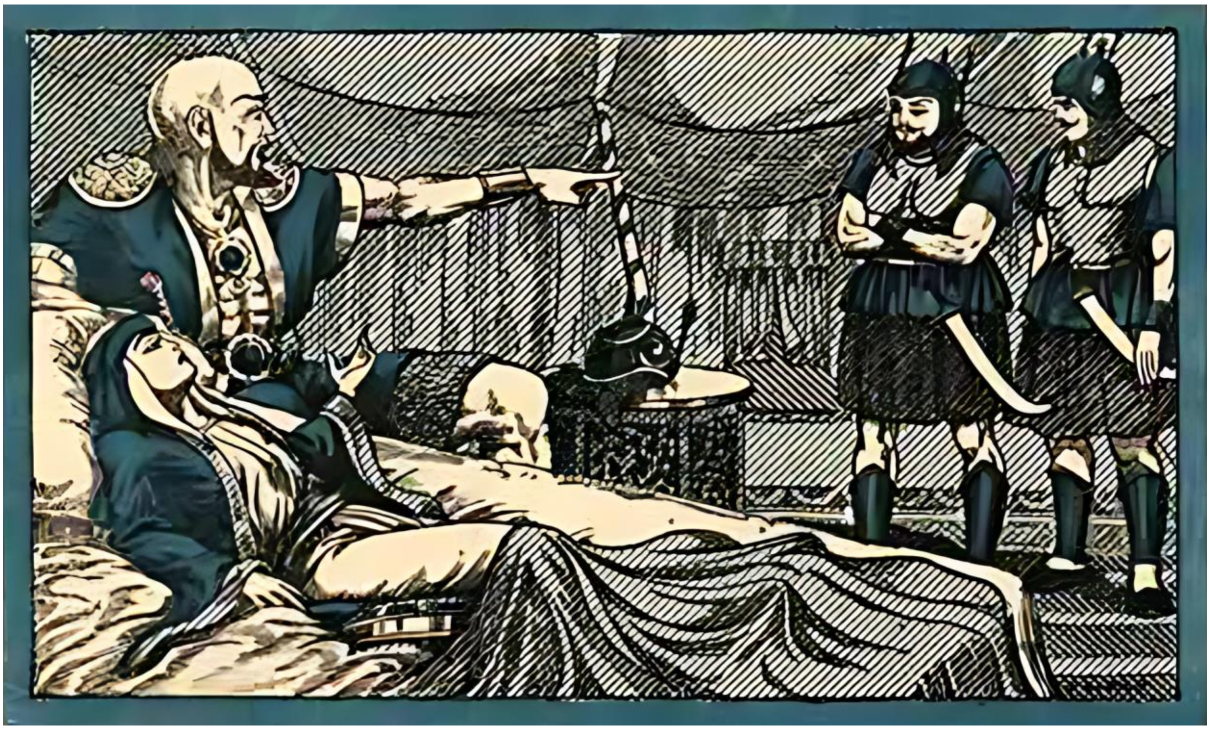
उसने खालीद के डेरे में आँखें खोलीं। पास खड़े सैनिकों से कहा-" एक रात के सफ़र की दूरी पर सूखे कुँए के पास मेरा काला ऊँट गिरा पड़ा है। उसके पास पानी ले जाओ। वह मक्का से तेरह दिन में खलीफा की चिठ्ठी लाया है।"

खालीद ने खलीफा की चिट्ठी पढ़ी। उसके सैनिकों ने खलीफा के ऊँट की रक्षा की।

* * * *

कुछ ही दिनों में एक बहुत बड़ी सेना सीरिया की ओर चली। वह सेना खालीद की थी। उसमें कई अरब सपरिवार भरती हुए। उनके पीछे उनके परिवार थे। खालीद के अङ्गरक्षक इस सेना के आगे चल रहे थे। उनके आगे भी कुछ सैनिक थे। उनमें एक पालकी में कनाना था। कहीं उसे गरमी न लगे, इसलिए उस पर एक कम्बल डाला गया।

उसके पीछे काला ऊँट चल रहा था। वह जिस दिन चला था, उस दिन बहुत कमज़ोर था। पर जैसे जैसे वह चलता गया, वह सुधरता गया। वह खलीफा का ऊँट था। उस पर भी कम्बल डाल रखा था, ताकि उसे धूप न लगे।





चार दिन, पालकी में सवारी करने के बाद, कनाना की हालत इतनी सुधर गई थी कि वह काले ऊँट पर सवारी कर सकता था। खालीद ने उसको कीमती पोषाक, तलवार और भाला दिलवाया। परन्तु कनाना ने उनको लेने से इनकार करते हुए कहा-"मैंने कभी भाला नहीं पकड़ा है। मेरे लिये गड़रिये के कपड़े काफी हैं।" वह तो चाह रहा था कि पीछे आनेवाली स्त्रियों के साथ आये। पर वह सेना उसका इस तरह सम्मान कर रही थी, जैसे वह महायोद्धा हो। जो कोई खालीद के सामने सलाम करता, वह कानाना को भी सलाम करता। उसे फिर भागने की सूझी। वह जानता था कि बेनिसाद की टोली कहाँ थी। जब वह सेना, उसकी टोली के पास पहुँचेगी, तब उसने भागने की ठानी।

एक दिन शाम को सेना ने रेगिस्तान में पड़ाव किया। कनाना का तम्बू खालीद के तम्बू के पास ही था। "कल यह सेना हमारी टोली के पास से गुजरेगी। मैं जैसे भी हो, बचकर अपने लोगों में जा मिलूँगा।" कनाना ने भोजन करते हुये कहा।

जो उस सेना में भरती हुये थे, उन्हे खालीद पर पूरा विश्वास था। उसने एक ही समय में डमास्कस का घेरा डाला। हिरोक्लियस की एक लाख सेना से मुकाबला किया। उसने इधर हिरोक्लियस की सेना को हराया, और उधर डमास्कस को भी वश में कर लिया। उस युद्ध में भाग लेने वाले, कई इस सेना में भी थे। कनाना पासवाले सैनिकों को खालीद की प्रशंसा करते सुन फूला न समाया। परन्तु उसे हिंसा का मार्ग पसन्द न था।



इतने में खालीद के तम्बू में से यह सुनाई दिया-"जो हमारे पास रसद है, वह तीन रोज के लिए ही काफी होगी।"

यह सुनते ही कनाना ने खालीद के पास जाकर कहा-"हुजूर, बेनीसाद टोली पास है। छः सप्ताह पहले ही फसल कटी है। उनके पास कम से कम, पाँच सौ ऊँटों के ढ़ोने लायक, अधिक अनाज होगा। हुक्म हो तो परसों सवेरे तक अनाज ले आऊँगा।"

सूर्यास्त के समय ऊँट तैयार कर दिये गये। धान खरीदने के लिए आवश्यक धन दस ऊँटों पर रखा। अनाज लाने के लिए बोरे बीस ऊँटों पर डाले गये। एक ऊँट पर वे उपहार थे, जो खालीद, कनाना के पिता के पास भेज रहा था। और सौ घुड़सवार को साथ लेकर कनाना अपने लोगों से मिलने निकला।

"हमारे सीरिया तक पहुँचने तक रसद आदि, का इन्तजाम करना तुम्हारी जिम्मेवारी है।" खालीद ने कनाना से कहा।

कनाना के अपनी टोली तक पहुँचते, आधी रात हो गई। तम्बुओं के बाहर बँधे सफेद ऊँट ने उसे पहचान लिया।

तुरन्त कनाना का पिता बाहर आया। बाप-बेटे ने एक दूसरे को गले लगा लिया। "मेरी गलती माफ करो, बेटा। तुमने वह पराक्रम दिखाया है, जो कभी मैंने अपनी जिन्दगी में न दिखाया था। मैं तेरी कायरता पर शर्मिन्दा था, अब तेरी बहादुरी के कारण शर्मिन्दा हूँ।" पिता ने कहा।

कनाना ने कुछ कहना चाहा। पर मुख से बात न निकली। आनन्द के आँसू बहाता, उसने पिता का और जोर से आलिङ्गन किया। वह, कनाना जो बीस

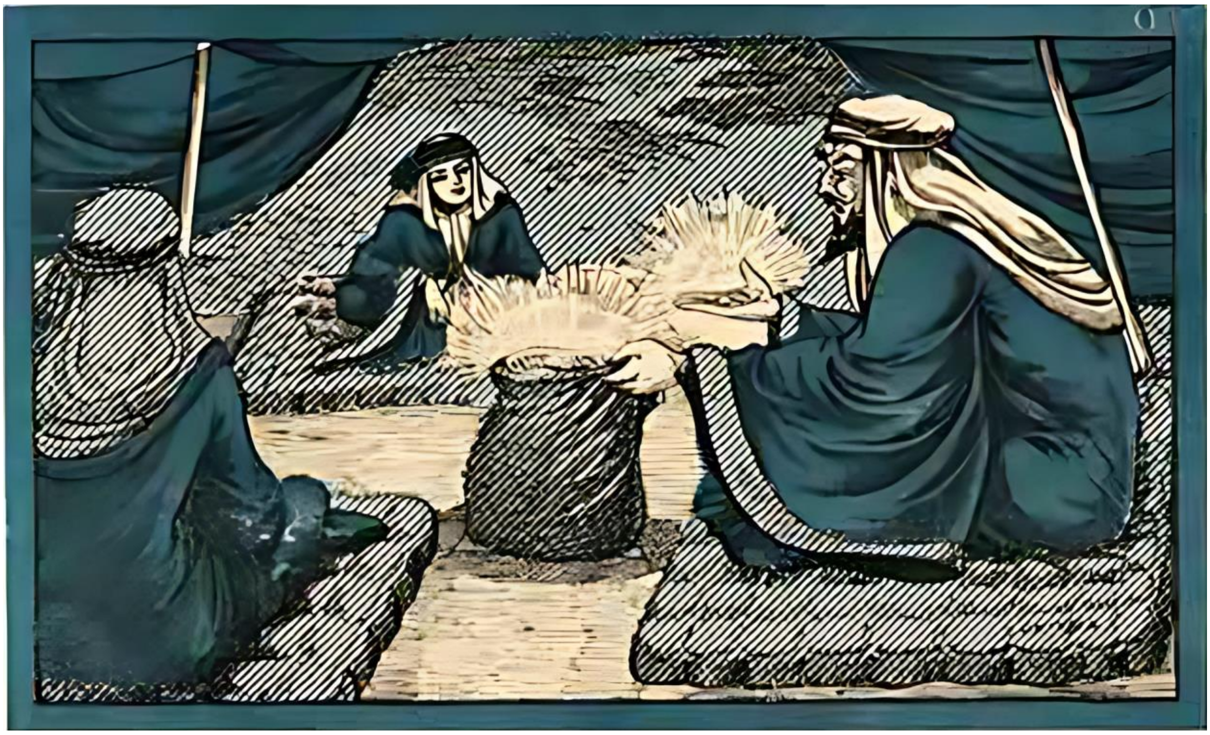
डाकुओं से भी न घबराया था, पिता की बात सुनकर कुछ चकराया।

पिता ने सम्भलकर कहा-"अरे, क्या सो रहे हो? उठो। कनाना वापस आया है।" फिर क्या था, सब जगह गूँजने लगा-"कनाना आया है।" सब उठे। वे पहले ही जान गये थे कि उसने अपने भाई और ऊँट को कैसे छुड़वाया था। यही नहीं खलीफा के आदमी कनाना के पिता को सोने की मुहरों से भरी एक थैली दे गया था। अब कनाना बहुत से उपहार लेकर, सौ घुड़सवारों के साथ स्वयं आया था।

बेनीसाद की टोली ने कभी इतना सम्मान न पाया था।

सब जगह मशालें जलाई गईं। कनाना के सम्मान में दावत दी गई। अतिथियों के सम्मान में स्त्रियों ने देशभक्ति के गीत

गाये। वे गीत पुराने थे। पर जहाँ-जहाँ और नाम था उन्होंने वहाँ वहाँ कनाना का नाम गाया। यह गीत सुनते-सुनते "मरुभूमि भयङ्कर" को नया जोश आया। उसने खालीद की सेना में भरती होने का वचन दिया। तुरन्त और दो सौ आदमी भी सेना में भरती हो गये।



अगले दिन दुपहर को, कनाना और उसके साथ आनेवाले सो गये। बेनीसादों ने इस बीच अनाज के बोरे तैयार कर दिये। अपने आयुधों को भी तेज किया। खलीफा ने जो काम उसे सौंपा था, कनाना ने उसको सफलतापूर्वक किया। परन्तु वह सेना से भाग जाने के अपने इरादे में कामयाब न हो सका।

*   *   *   *

सीरिया से आई हुई सेना और अरेबिया से आई हुई सेना ने पालस्तीन की सीमा पर डेरे डाले। खालीद ने कनाना को अपने डेरे में बुलाकर कहा-"शत्रु सेना हमारे पास आ रही है। उनके बारे में तरह-तरह की जानकारी मिल रही है। क्या तुम जाकर ठीक ठीक जानकारी लाओगे? उसके लिए तुम क्या चाहते हो?"

"मुझे एक घोड़ा दीजिये और आपके कमर में बँधी पेटी दिलवाइये।" कनाना ने कहा।

खालीद हमेशा अपनी कमर में एक नीले रङ्ग की पेटी बांधे रखता था। वह ऊँट के चमड़े की बनी थी। उस पर रङ्ग लगाया गया था। उसको खालीद के



सैनिक दूर से पहचान लिया करते थे। अरेबिया के रेगिस्तान में किसी और के पास उस रङ्ग की पेटी न थी।

"तुम जो घोड़ा चाहो, ले लो। पर तुम मेरी पेटी क्यों चाहते हो?" खालीद ने पूछा।

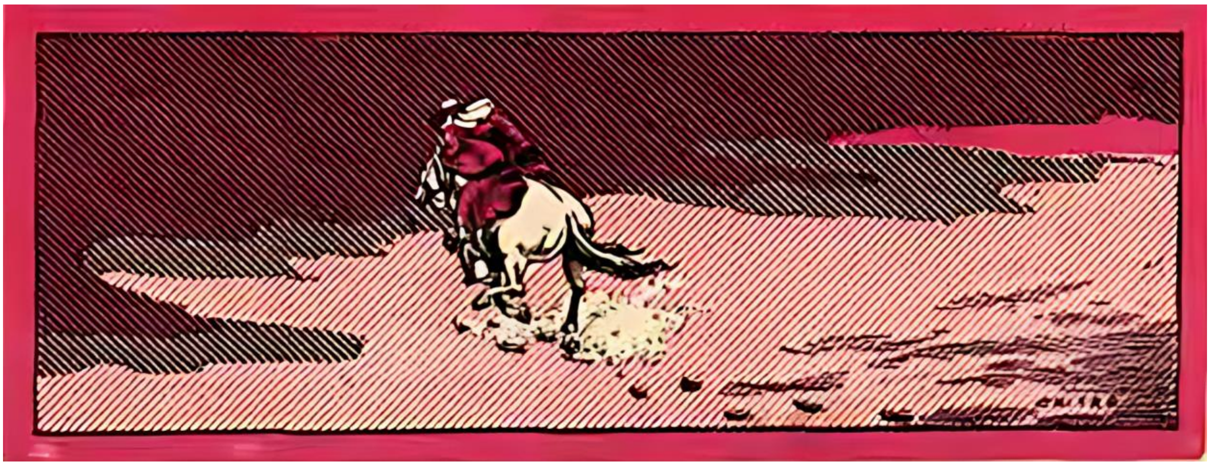
"मैं उसको अपनी कमीज़ के अन्दर छुपा लूँगा। मेरे जाने के बाद आप यह घोषणा करवाइये कि 'कोई आदमी आपकी पेटी लेकर दुश्मनों में जा मिला है।' यह भी घोषणा कीजिये कि अगर उसका कोई टुकड़ा भी लायेगा तो उसको ईनाम दिया जायेगा।" कनाना ने कहा।

खालीद ने बिना कुछ रहे, अपनी पेटी उतारकर कनाना को दे दी। कनाना ने उसे भक्तिपूर्वक कमीज़ के अन्दर कमर में बाँध लिया। उसने खालीद को प्रणाम किया। उसका आशीर्वाद पाकर डेरे से बाहर आकर, खालीद के घोड़ों में से एक अच्छे घोड़े को चुनकर उस पर सवार हो अन्धेरे में निकल गया।

अगले दिन, डेरों में कोई चहल-पहल न थी। सैनिकों ने सुना कि खालीद की पेटी कोई चुरा ले गया था, अगर उसका एक टुकड़ा भी किसी ने लाकर दिया तो, उसे ईनाम दिया जायेगा। सुना गया कि पेटी की टुकड़े पर सोने की मुहरें फैलाकर दी जायेंगी।

खालीद, हाथ बाँधे, शत्रुओं के आने की प्रतीक्षा करता दिखाई दिया। सैनिकों ने समझा कि वह आदमी पेटी के लिए शोक कर रहा था। यह अनुमान अगले दिन और तीसरे दिन और भी पक्का हो गया। खालीद के सैनिक, उस पेटी को जोर शोर से खोजने लगे।

(अभी है)





सिद्धार्थ ने एक दिन आराम से बाग में बिताया। वे तालाब में खेले कूदे। अच्छी अच्छी पोषाकें पहनीं। खूब खुशियाँ मनाईं।

सूर्यास्त हो गया। ठीक उसी समय यशोधरा ने एक लड़के को जन्म दिया। शुद्धोधन बड़े प्रसन्न हुये। "यह मेरे लड़के के लिये आनन्द का एक और बिषय है। वह कभी भी अब सन्यास के बारे में नहीं सोचेगा।" यह सोचकर उन्होंने यह खुश खबरी पहुँबाने के लिए एक आदमी को तुरन्त बाग में भेजा।

सिद्धार्थ ने यह जानते ही कि उन्हें एक लड़का हुआ है कहा-"तो राहुल पैदा हो गया?" राहुल का अर्थ प्रेम के योग्य, होता है।

तभी सिद्धार्थ ने सन्यास लेने का निश्चय कर लिया था। जीवन में आनेवाले रोग, वार्धक्य, मृत्यु से बचना है तो जीवन से ही

मुक्ति पानी होगी और इसके लिए सन्यास ही उनको एक मात्र साधन जञ्चा। फिर भी, अपने लड़के को स्वयं अपनी आँखों देख कर, खुश हो कर, फिर सन्यास लेने की उन्होंने ठानी।



सिद्धार्थ जब वापस जा रहे थे तो किसागौतमी राजकुमारी ने अत्यन्त आनन्द में यह गाया।

निब्युता नून सामाता, निव्युता नून स्रोपिता।

निब्बुता नून सानारी, बध्ययन् ई दिवोपति।

(उसका मतलब था कि इस समय सिद्धार्थ को देखकर, उनके माता, पिता और पत्नी बहुत ही आनन्दित होंगे। निव्वृति के दो अर्थ हैं। एक सुख क्षेम (निवृति) और दूसरा अर्थ समाप्ति, तिरोगमन आदि (निवृत्ति)

किसागौतमी की बातों में सिद्धार्थ ने वैराग्य का अर्थ ही देखा। इस पर सन्तुष्ट हो कर अपने गले की रत्नमाला को उन्होंने उसे दे दिया। परन्तु उस लड़की ने सोचा कि सिद्धार्थ ने उससे प्रेम किया है, और उसे भी वह यशोधरा की तरह रानी बनायेंगे।

सिद्धार्थ घर आकर.... अपने गद्दोंवाले बिस्तरे पर लेट गये। उनको हर्षित करने के लिए स्त्रियों ने उनके सामने नृत्य किया। गायन किया, वाद्य बजाये। परन्तु सिद्धार्थ इनमें किसी भी चीज़ से आकर्षित नहीं हुये। वे आँखें मून्दकर सो गये।

युवराजा को सोता देख, उसके चारों ओर बैठी स्त्रियाँ गाना, नाचना रोक कर अपने अपने वाद्यों पर सिर रखकर ऊँघने लगीं।

थोड़ी देर सोकर सिद्धार्थ जाग उठे। उन्होंने अपने चारों ओर देखा। सोने से पहले जो स्त्रियाँ अप्सराओं की तरह लगती थीं, अब भिन्न भिन्न भङ्गिमाओं में सर्वथा अनाकर्षक लग रही थीं। नृत्य और गायन करते समय, उनमें जो सौन्दर्य दीख पड़ता था वह निद्रादेवी ने हर लिया था।

सिद्धार्थ को अपना निश्चय याद आ गया। वे झट से उठकर बैठ गये। हाँ,

इसी रात को, इन सब विनोद विलासों से विदा लेकर सन्यास ग्रहण करना होगा। मुक्ति के कठिन मार्ग पर चलना होगा।

ये विचार जब उनके मन में उठ रहे थे, तब उनको कोई कान में यह कहता लगता था:

"पगले, क्यों सन्यास लेते हो? सात दिन में, तुम सात हजार द्वीपों के सम्राट होने जा रहे हो। दसों दिशाओं में तेरा राज्य होगा। कितनी ही बड़ी सेना, तेरी आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ी रहेगी। तेरे वैभव ऐश्वर्य का अन्त न होगा। इसलिये इन विचारों को छोड़ दे और निश्चिन्त होकर रह।"

इन बातों से बुद्ध की व्याकुलता शान्त न हुई। परन्तु और भी बढ़ गई। सात रोज बाद तो क्या, अगर तभी उसी क्षण उनको साम्राज्य मिलता, तो वे उसे छोड़ कर चले जाते।

सिद्धार्थ ने द्वार के पास जाकर पूछा-"सीढ़ियों के पास कौन है?" यह सुन, चेन्ना ने सामने आकर कहा-"मैं हूँ महाराज।"



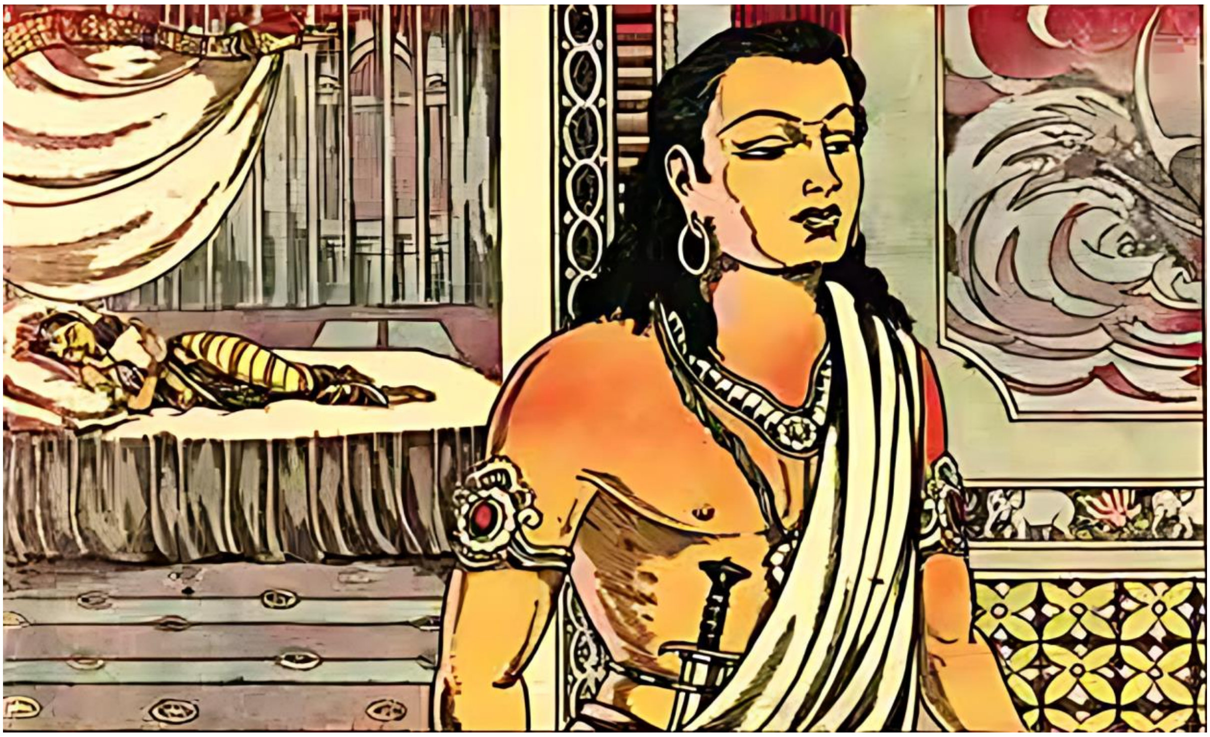
"तुम ही हो, मेरे घोड़े को जीन लगाकर तैयार करो।" सिद्धार्थ ने कहा। चेन्ना ने कण्टक नामक घोड़े को जाकर तैयार किया।

इस बीच, सिद्धार्थ अपने लड़के को देखने के लिए यशोधरा के कमरे में गये। कमरा खोलते ही उनको यशोधरा पलङ्ग पर लेटी हुई दिखाई दी। उनके पलङ्ग के चारों ओर फूल पड़े थे। यशोधरा गाढ़ निद्रा में थी। नींद में, उन्होंने, एक हाथ से अपने लड़के को छाती से लगा रखा था। लड़का भी सो रहा था।

सिद्धार्थ जान गये। यशोधरा का हाथ बिना उठाये, उनके लिए लड़के को उठाना सम्भव न था। हाथ हिला तो यशोधरा जरूर उठेगी और उठकर मुझसे बातचीत करेगी। उससे कुछ देर बातचीत करने के बाद, हो सकता है, मेरा सन्यास लेने का निश्चय कुछ शिथिल हो जाये। सिद्धार्थ दरवाजे की देहली पकड़ कर यह सोचते सोचते वहीं खड़े रहे।

"मैं, राहुल को फिर देखूँगा। मुक्ति का मार्ग खोजने मैं जा रहा हूँ। ऐसे समय पर, पुत्र वात्सल्य के कारण मुझे इस उत्तम उद्देश्य को नहीं बिगाड़ना चाहिये।" यह सोच सिद्धार्थ पीछे हटे। सीढ़ियाँ उतरकर उन्होंने देखा कि घर के सामने घोड़ा तैयार खड़ा था।

कण्टक, साफ, सफेद रङ्ग का घोड़ा था। उसकी लम्बाई आट्ठारह फुट थी, ऊँचाई भी इसके अनुपात में थी। सिद्धार्थ, उसकी पीठ सहलाकर, उस पर चढ़ गये। घोड़ा आगे जा रहा था, और चेन्ना उसकी पूँछ पकड़ कर पीछे चला आ रहा था। जब सिद्धार्थ, नगर का प्राकार पार करके बाहर गये तो आधी रात हो चुकी थी।



नगर के द्वार के किवाड़ बहुत भारी थे; कई के मिलकर हटाने से वे खुलते थे। यही नहीं, द्वार पर शुद्धोधन ने अनगिनत पहरेदार नियुक्त किये हुये थे। यह सब व्यवस्था इसीलिए ही की गई थी ताकि सिद्धार्थ नगर से भाग न निकलें। पर ठीक उसी समय वे सब सो रहे थे और द्वार खुले हुये थे।

नगर से थोड़ी दूर जाने के बाद, सिद्धार्थ ने पीछे मुड़कर देखा। भरी चान्दनी में, कपिलवस्तु नगरी चमचमा रही थी। सिद्धार्थ, सवेरा होने से पहले, तीन राज्यों को पार करके अनोमा नदी के पास गये। कण्टक इस यात्रा में तेजी से भागता आया था। चेन्ना भी उसके साथ भागा आ रहा था।

सिद्धार्थ अनोमा नदी के उस पार गये। वहाँ सफेद रेत थी। वहाँ उन्होंने अपने सारे आभूषण निकालकर चेन्ना को देते हुये कहा- "इन्हे और घोड़े को लेकर बापस चले जाओ।"

"मुझे वापस क्यों भेज रहे हैं? मैं भी आपके साथ आऊँगा। आपके साथ मैं भी सन्यास लूँगा।" चेन्ना ने आग्रहपूर्वक कहा।





"अगर तुम मेरे साथ ही रहे तो महाराजा शुद्धोधन और यशोधरा देवी को मेरे बारे में कैसे पता लगेगा? इसलिये तुम कपिलवस्तु जाकर मेरे सन्यास के बारे में, मेरे पिता, मेरी मौसी, प्रजापती और मेरी पत्नी को कहो। सन्यास के लिए तो अवसर में ही तुम्हें बाद में दूँगा। सबसे कहना कि मेरे लिये कोई भी शोक न करे। कहना कि राहुल का सावधानी के साथ पालन पोषण हो। मैं पूर्ण बुद्ध होने पर उसको देखूँगा।" सिद्धार्थ ने कहा।

यह सुन चेन्ना को दुख हुआ। वह घोड़ा लेकर वापस जाने सगा।

सन्यास ग्रहण करने वाले को मुण्डन करवाना होता है। क्योंकि उनका मुण्डन करने वाला कोई न था इसलिए उन्होंने अपने केश एक हाथ में पकड़ कर, तलवार से काट दिये। उनके सिर पर दो अंगुल ऊँचे बाल रह गए। कहते हैं कि अन्त तक न वे बढ़े न घटे ही।

इसके बाद सिद्धार्थ ने काषाय वस्त्र पहने, कमण्डल लिया। जन सञ्चलन होने से पहले वे अनुप्रिय नाम की अमराई में चले गये। वे बाग में सात दिन निराहार व्रत करते रहे। अगले दिन वे राजगृह की ओर निकले। पूर्व द्वार से नगर में प्रवेश करके उन्होने घर घर भिक्षा माँगी।

उस समय राजगृह में आषाढ़देशी नाम का उत्सव हुआ करता था। गलियों में लोग भरे हुए थे। घरों के सामने खड़े सिद्धार्थ को उन्होने बड़े आश्चर्य से देखा। उन्होने वैसा सन्यासी पहले कमी कहीं न देखा था। राजगृह के राजा बिम्बसार के पास जाकर कुछ लोगों ने कहा-"महाराज, हमारे नगर में एक अजीब

व्यक्ति भीख माँग रहा है। वह या तो कोई देवता है, गन्धर्व है, गरुड़ है, नाग है। कुछ भी हो वह मामूली आदमी कतई नहीं है।"

"अगर यह जानना चाहते हो कि वह वास्तव में कौन है, उसके साथ नगर से बाहर जाओ और मालूम करो। देवता होगा तो अदृश्य हो जाएगा, गरुड़ होगा तो उड़ जाएगा। नाग होगा तो भूमि में चला जाएगा। मामूली आदमी होगा तो माँगी हुई भिक्षा को लेकर कहीं बैठकर खायेगा।" बिम्बसार महाराज ने उनसे कहा।

इस बीच सिद्धार्थ भिक्षा लेकर नगर के माहर बाले पाण्डव पर्वत के पास जाकर एक पेड़ के नीचे बैठकर भोजन करने लगे।

उन्होंने ऐसा भोजन कभी न किया था। जीवन भर मिष्टान्न ही खाये थे। ऐसे भोजन को छुआ तक न था। परन्तु तपस्या में इस तरह के कष्ट कितने ही सहने थे, इस विश्वास से उस भोजन को निगलते हुए उन्होने सोचा-"सिद्धार्थ, तुम्हारा शरीर कोई सोने का नहीं है। कितनी ही चीजों से मिलकर बना है। यह भोजन



शरीर में जायेगा, पचेगा। शरीर इसमें से वही चीज़ लेगा जिसकी की उसको जरूरत है। यह भी एक आहार ही है।"

राजगृह के कुछ लोग सिद्धार्थ के पीछे गये। उनको भोजन करता देख राजा बिम्बसार को इस बारे में जाकर बताया।

महाराज बिम्बसार ने पाण्डव पर्वत के पास आकर स्वयं सिद्धार्थ से पूछा-"आपका नाम क्या है? आपका कौन सा देश है? कहां के रहनेवाले हैं?"

सिद्धार्थ ने बताया। तुरन्त पता लगा कि वे बचपन के साथी थे।

"सिद्धार्थ! यह क्या! तुम्हारे वंश में कभी किसी ने यों भीख माँगकर खाया है? क्यों यह कर रहे हो? हमारे राज्य में अस्सी हजार गाँव हैं। अङ्ग और मगध देशों का क्षेत्रफल पाँच हजार वर्ग मील है। मुझे प्रति वर्ष बहुत सा धन मिलता है। तुम्हें मैं अपना आधा राज्य दे देता हूँ। आराम से राज्य करो।" बिम्बसार ने कहा।

"मुझे राज्य नहीं चाहिए। मुझे चाहिए बुद्धत्व।" सिद्धार्थ ने कहा।

बिम्बसार ने उन्हे कई तरह से कहकर समझाया, पर सिद्धार्थ न माने। आखिर बिम्बसार ने कहा- "मुझे यह वचन दो कि जब तुम बुद्ध हो जाओगे, तब तुम अपना पहला उपदेश राजगृह में ही दोगे।" सिद्धार्थ से यह मनवाकर वह अपने घर गया।

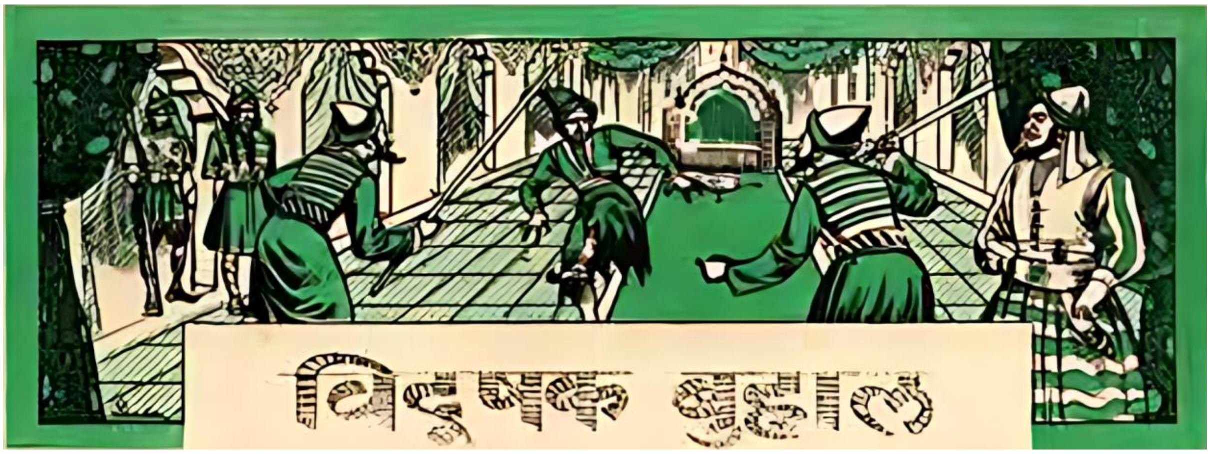
सिद्धार्थ जब उस पर्वत से जा रहे थे तो उनको दो ध्यानस्थ योगी दिखाई दिये.. उनका नाम था अलार और उड़क। पर उन्हें लगा कि सिर्फ ध्यान से बुद्धत्व नहीं पाया जा सकता था। बिना कठिन तपस्या के उद्देश्य प्राप्त न हो सकेगा, यह सोच वे ऊखेल वन गये।

इस मन के पास रेत के बड़े बड़े टीले थे। उनके कारण ही, उसे ऊखेल कहा जाता था। उस अरण्य में.... अनादि काल से हजारों योगी रहा करते थे।

जब कभी उनके मन में कोई क्षुद्र विचार आता और तपस्या उस तरह भग्न होती तो वे नदी में स्नान करते और उस में से मुट्ठी भर रेत ले, अपना क्षुद्र विचार सब को बताकर उस रेत को एक जगह फेंक देते। इस तरह रेत फेंकने से ही वहां टीले बन गये थे।

(अभी है)





खलीफा हसन अल रशीद की नौकरी में एक विदूषक हुआ करता था। उसका नाम था बुहाल। वह केवल विदूषक ही न था, ज्ञानी भी था।

एक दिन खलीफा ने विदूषक से पूछा "बुहाल, क्या तुम जानते हो, हमारे बगदाद शहर में कितने मूर्ख हैं?"

विद्टषक ने कहा-"जी, मैं जानता हूँ।"

"अगर जानते हो तो उन सबकी एक सूची तैयार करो। एक गलती भी न हो, समझे?" खलीफा ने कहा।

विदुषक ने हँसकर कहा-"अधिक आसान तो बगदाद के ज्ञानियों की सूची बनाना है। मैं उनकी सूची बनाऊँगा। जो उनमें न हों, वे सब मूर्ख हैं।"

बुहाल, जब खलीफा न था, उसके सिंहासन पर बैठ गया। उसकी इतनी हिमाकत देख, दरबारियों ने उसको लाठियों से खूब पिटवाया।

जब खलीफा आया तो विदुषक रो रहा था। खलीफा ने सारी घटना के बारे में मालूम करके उसको आश्वासन देना चाहा।

"हुजूर, गलती कर रहे हैं। मैं अपने घावों के बारे में नहीं रो रहा हूँ। थोड़ी देर ही इस सिंहासन पर बैठने से मुझे इतनी मार पड़ी। आप तो सालों से बैठे हैं, न मालूम उस दुनिया में आपको कितनी मार पड़ेगी, इसकी कल्पना करके ही मैं दुखी हो रहा हूँ।" विदुषक ने कहा।

बुहाल को शादी पसन्द न थी। यह जानकर खलीफा को गुस्सा आया। उसने अपनी दासियों में से एक को चुनकर, उसकी उससे जबर्दस्ती शादी कर दी। जब रात को उसकी स्त्री, उसके पलङ्ग पर

रमादेवी

बगल में आकर बैठी तो वह "हाय हाय" करता, चिल्लाता राजमहल में इधर-उधर भागने लगा।

खलीफा ने उसको बुलवाकर पूछा- "अरे दुष्ट, तुम्हें सुन्दर स्त्री खोजकर दी और तुम उसे छोड़कर हाय-हाय करते, भाग रहे हो?"

विदूषक ने कहा-"हुजूर माफ़ करो। मेरी पत्नी सुन्दर है, इसमें कोई शक नहीं है। पर जब वह मेरे पास आकर बैठी तो उसके दिल से मुझे ये आवाजें सुनाई दी-'मुझे अच्छे कपड़े चाहिए, मुझे अच्छे गहने चाहिए।" ये बातें सुनकर, डरकर मैं भाग आया।"

बुहाल ने ये बातें खलीफा से धन ऐंठने के लिए न कही थी, क्योंकि खलीफा ने अपने विदूषक को एक बार हज़ार सोने की दीनारें दी थीं। पर विदूषक ने उसे लेने से इनकार कर दिया। फिर थोड़े दिनों बाद, खलीफा ने उसे एक हज़ार और दीनारें देनी चाहीं, विदूषक ने तब भी लेने से इनकार कर दिया।

"मैं खुश होकर तुम्हें ईनाम देना चाहता हूँ, और तुम लेने से इनकार



कर रहे हो। क्या बात है?" खलीफा ने पूछा।

इस प्रश्न के उत्तर में विदूषक ने अपना पैर खलीफा के मुँह के सामने रखा। यह गुस्ताखी देख, खलीफा के नौकरों ने विदूषक को खूब पीटा। परन्तु खलीफा ने उनको रोकते हुए कहा-"क्यों ऐसी गुस्ताखी करते हो?"

"हुजूर गौर करें। अगर मैने हाथ पसारकर आपके दिये हुये उपहार लिये हुये होते तो आज मैं आपके सामने यों पैर न रख पाता।" विदूषक ने कहा।

एक बार युद्ध से खलीफा वापस आ रहा था। खलीफा के साथ बुहाल भी था। एक पड़ाव पर, आधी रात के समय खलीफा

को बहुत प्यास लगी। उसको उठकर, "पानी पानी" चिल्लाता देख, विदूषक एक लोटे में पानी ले आया।

"पानी पीने से पहले, हुजूर एक सवाल का जवाब दें। अगर यह पानी न मिला होता, तो हुजूर इसके लिए क्या देते?" विदूषक ने पूछा।

"आधा राज दे देता" कहते हुये खलीफा ने पानी पिया।

"अगर यह पिया हुआ पानी मूत्र के रूप में बाहर न आया और अन्दर ही रह गया, तो उसको बाहर लाने के लिए क्या देंगे?" विदूषक ने पूछा।

"जरूरत हुई तो आधा राज्य दे दूँगा।" खलीफा ने कहा।

"इतने से पानी के लिए इतने-सी मूत्र की कीमतबाले राज्य के लिए हुजूर आप क्यों युद्ध करते हैं?" बुहाल ने पूछा।

खलीफा ने शर्मिन्दा हो सिर नीचे झुका लिया।



CHANDAMAMA (Hindi) APRIL 1959 Regd. No. M. 5452



बुद्ध चरित्र